३०

...तीचरितम्

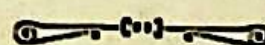
पं० श्री आनन्द झा न्यायाचार्यः

चन्द्रावतीचरितम् ।

श्रीमत्केदुभाजे विद्वद्वराय श्रीमत्प्रभुलाल गोस्वामि-
साशीर्वादं प्रदीयते चरितमिदं मया ते
आनन्द झा
25-7-75

पण्डित प्रवर—

श्री आनन्दझा न्यायाचार्य्य–प्रणीतम्–





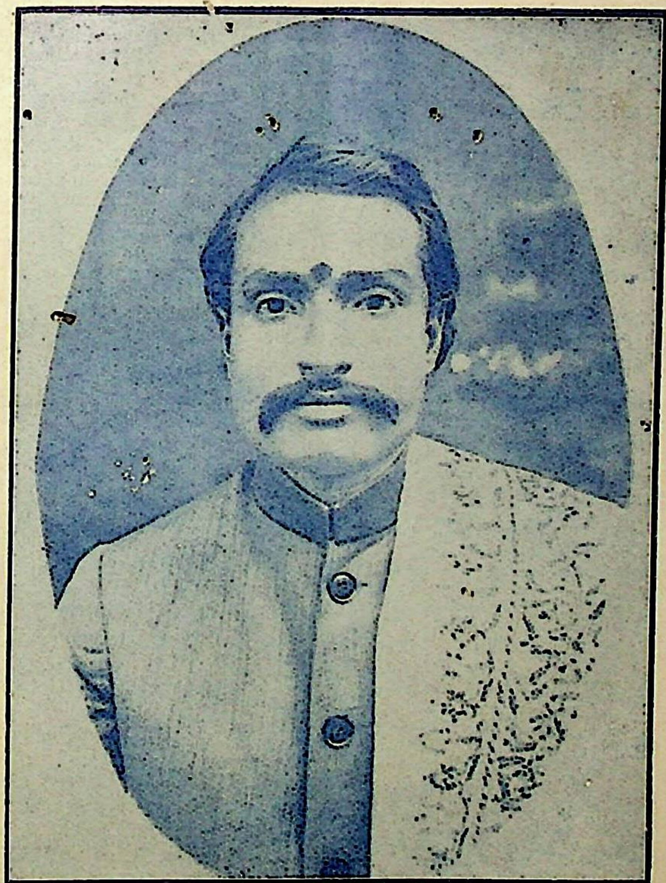


प्रकाशकः—

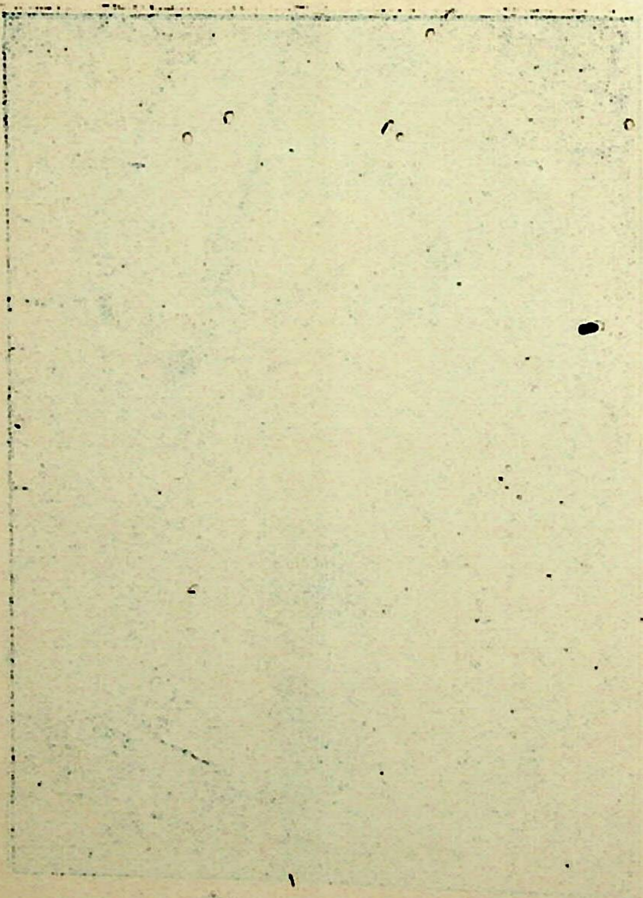
रानी चन्द्रावती श्यामामन्दिर ट्रष्ट
कचौरीगली, बनारस सिटी ।



मुद्रकः—
श्री उ० का० झा
पी० मोद प्रेस, काशी ।



पं० श्री आनन्द झा न्यायाचार्य



किञ्चित् ।

विदितमेतदस्तु तत्रभवताम् अनस्तविस्तृतस्वयशस्ततिप्रतिफल समस्तसमस्ताऽऽयस्तस्तेनस्तुतस्तनयित्नुसमाश्वस्ततमःस्तोमानाम् निस्सीमसुरसरस्वतीसेवासमासादितसाङ्गस्यसारससाहित्यसमुल्लासितमानसानाम् यत् भुवनभवनभासनभासनविभूति-विभूतिप्रभाविभासितप्रभावायाः दुःखदावदहनदग्धदैन्याऽपनोदनविनोदिदयोद्रेकविद्रुमदृढगदाऽऽघातविद्राविताऽनेकजनदारिद्र्यायाः देव्याश्चन्द्रावत्त्याः समुचितोपचितचिञ्चामीकरचारुचाकचिक्यरुचिरमहाचाराऽऽचारगोचरत्वे चरितवर्णने प्रवृत्तस्य ममाऽनवद्यविद्याविद्वेषिव्यवस्थितिमार्जनीसमुत्सारितमनीषोन्मेषहृदयस्य प्रतिपदं स्खलनस्खलनमेव गन्तुमर्हति चित्राऽतिचित्रताम् ।

किन्तु अक्षमक्षमापक्षपातदक्षान्तरक्षाणाम् भवादृशां सदये हृदये यदि स्खलितबहुलविलोलबालवाग्विलासन्यायेन जनयेदियं कृतिः किञ्चिदपि तोषं नूनमवधारयेदात्मानं सफलायासमियम्मे लेखनी वराकी ।

यैश्चाऽगुरुगन्धियशोऽभिशोभिताऽऽशावलयैरपि गुरुगन्धियशोऽभिशोभिताशावलयैः, नामरूपाभ्यां भेदमावहद्भिरप्यर्थतो भेदविधुरैर्देवत्रयगतामिव संख्यां वहद्भिः स्वसंख्यावदग्रेसरैर्महामहोपाध्यायवर्य्यैरेतत्कृतिविषये प्रदत्ता भव्यतोद्भावनफला भव्यभव्या सम्मतिः, तेभ्यः किमुपायनीकर्त्तुमर्हामि ऋते सविनीति-प्रणतिपुष्पाञ्जलिम ।

एतत्प्रणयनसमयेच काशीस्थराजकीयसंस्कृतकालेजाध्यापकैस्तत्र भवद्भिः श्रीमद्बालबोधमिश्रमहोदयैर्यत् अंशविशेषश्रवणकष्टसहनपूर्वकं विमलहृदयानुरूपोद्गारेण दृढीकृता मदीय-प्रणयनप्रवृत्ति स्तदर्थं तेभ्यः कियन्तो धन्यवादा दीयन्ताम् ।

अनन्तरमन्तर्य्यामिचरणरेणुषु पातयन् प्रणामपाटलपटलं विरमान्य नल्प-जल्पन धाष्ट्र्यादिति ।

विनितो
लेखकः

शुद्धिपत्रम् ।

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ	पंक्तिः
ख्याता	ख्यातो	५	१
वहन्ती	वहन्ती	५३	४
चन्द्रकता	चन्द्रकला	६०	३
लिड्ग	लिङ्ग	६६	१
सत्व मैथिली	सत्त्व गद्यमे	९४	१
यद्दि	यदि	१	२
सहायत	सहायतँ	३	५
वल	वलैँ	१५	४
मूत्ति	मूर्त्ति	१९	७
अन्तकरणहु	अन्तःकरणहुँ	२४	८
षूज्य	पूज्य	३२	४
वधूक	वधूकैँ	३२	७
सत्व	सत्त्व	४६	८
दूहूक	दूहूकैँ	५५	१
उठैँ	उठै	५७	३
गालाक	मालाकैँ	६१	१०
संश्था	संस्था	८	६
संसारक	संसारकैँ	९५	१
रूपैँ	रूपैँ	९६	८
कर्मचारीकअ	कर्मचारीक ओतै	९७	११
अमृतसुदाय टिप्प–	अमृतसमुदाय णिमे	१०६	१
सर्वप्रथम	दोसरवेर	३४	७
वनौने	वनांगेल	६९	६
भाँइ	भाइ	७९	३
भगवन्	भगवान्	१०९	१०

एहिग्रन्थ मे आएल किछु विशिष्ट लोकक नामा

एहिग्रन्थ मे आएल किछु विशिष्ट लोकक नाम

चित्रसूची

परित्यक्तमहामहोपाध्यायपदानाम् पद-नानादर्शनपरमाचार्य्याणाम् सर्वतन्त्रस्वतन्त्र–सनातनधार्मिकमर्य्यादासंरक्षण-बद्धप्रयत्न श्रीमत्पञ्चानन तर्करत्न भट्टाचार्य्याणाम् शुभाशीष्प्रशस्तिपत्रम् ।

श्री श्री शिवः

(१)

वेदान्त न्याय-शास्त्र-प्रवचननिपुणः श्रीमदानन्दशर्म्मा
झोपाख्यो मैथिलो यः स्फुरदमरगवीकाव्यनिर्माणमानः ।
चन्द्रावत्याख्यराज्ञ्याः सुविमलचरिते वीक्ष्य तत्साधुकाव्यं
मुक्ताहारं निबद्धं कनकमय-गुणेनेव नन्दामि सान्द्रम् ॥

(२)

कवयन्ति वयन्ति शब्द–जालं
वहवः पद्यमयं विशेष–शून्यम् ।
सविशेषगिरस्तु शक्तिमन्तो-
वत केचित् कविरेष तेषु गण्यः ॥

(३)

आनन्दो विद्वदानन्दः सदानन्दप्रसादतः ।
सदाऽऽनन्दं गुणग्राहिशिरःश्लाघ्यः प्रपद्यताम् ॥

शुभाशीष्प्रशस्तिरियं

श्रीपञ्चानन तर्करत्न भट्टाचार्य्यस्य

परित्यक्त-महामहोपाध्यायपद पदनानादर्शनपरमाचार्य्य
सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र श्रीमान् पञ्चानन तर्करत्न जी क
विशिष्ट सम्मति ओ आशीर्वाद ।

(१)

जे मैथिल पं० श्रीआनन्दझा, न्याय-वेदान्त आदि शास्त्र क निपुण व्याख्याता छथि, एवं जीवन-पूर्ण संस्कृतभाषामय काव्य क निर्म्माण-प्रयुक्त सम्मान क पात्र छथि, तनिक सुन्दर काव्य, रानी चन्द्रावती क जीवन चरित मे देखि, हम ओहिना प्रसन्न भै रहल छी जेना स्वर्ण-सूत्र मे गाँथल मोती क माला कैं देखि ।

(२)

एहन बहूत लोक होइत छथि जे काव्य करैत छथि । काव्य की करताह ? हँ एहन शब्द-जाल क रचना अवश्य करैत छथि जे छन्द मे जकड़ल मात्र रहैछ किन्तु ओहि मे चमत्कृति किछु नहि रहैछ । जनिक वाणी चमत्कृति-शालिनी हो एहन "शक्ति सम्पन्न" तँ क्यौ क्यो होइत छथि । किन्तु एहि कवि क गणना ओही विरल शक्ति सम्पन्न मे अछि ।

(३)

गुणग्राही-गण क श्लाघा-भाजन आनन्द (झा) विद्वान क आनन्दे छथि । भगवान क कृपा सँ ई सर्वदा—आनन्द प्राप्त करथु ।

श्री पञ्चानन तर्करत्न भट्टाचार्य्य—

विश्वविख्यातवैदुष्याणाम् "काशीहिन्दूविश्वविद्यालय-प्राच्य-विद्या विभाग" व्यवस्थापक (डाइरेक्टर) पदमलङ्कुर्वताम् महामहोपाध्याय श्रीमत्प्रमथनाथ तर्कभूषण-महाभागानाम् सम्मति-दलम् ।

BENARES HINDU UNIVERSITY

college of oriental learning.

Dated 20—2......1939

Benares.

श्रीविश्वनाथो विजयते

(१)

आनन्दशर्म्म-कविना सरसं प्रसन्नं
झोपाह्व—मैथिलकुलाब्धि-सुधाकरेण ।
"चन्द्रावती चरित"मारचितं सुकाव्यं
दृष्ट्वा परां मुदमहं समुपागतोऽस्मि ॥

इति विज्ञापयति
महामहोपाध्याय—
श्रीप्रमथनाथ तर्कभूषण-शर्म्मा

काशी हिन्दूविश्वविद्यालय–प्राच्य–विद्याविभाग क डाइरेक्टर स्वनामधन्य महामहोपाध्याय–श्रीमान्प्रमथनाथ तर्क–भूषण महोदय क अमूल्य सम्मति ।

मैथिल कुल स्वरूप समुद्र सँ चन्द्र क समान निर्गत, कवि आनन्द झा सँ रचित, रसपूर्ण एवं प्रसाद गुणयुक्त "चन्द्रावती चरित" नामक सुन्दर काव्य कैँ देखि, हम अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त कैल अछि ।

महामहोपाध्याय—
श्री प्रमथनाथ तर्कभूषण शर्म्मा—

भुवनभवनभासनयशसाम् कलिकाताविश्वविद्यालय-प्रधानदर्शना-ध्यापक-पदाऽध्यासीनानाम् महामहोपाध्याय श्रीमत्फणिभूषण तर्कवागीशमहाशयानाम् सारवती सम्मतिः

श्रीश्रीदुर्गा

पं. आनन्दझा न्यायाचार्य्य-विरचितं चन्द्रावतीचरितमिदं दृष्ट्वा नितान्तं सन्तुष्टं मे मनः। अत्र सन्निहिता स्फुटा मधुरता, वितता भावगम्भीरता, प्रसृता श्रुतिहारिता, विस्तृता सालङ्कारता, अनुगताच सरलता सर्वथा ख्यापयति कवयितुर्महाकाव्यनिर्म्माणसामर्थ्यम्।

पुष्पचयन, पूजाभाजन—संस्करण, महेशगीताभ्यास यज्ञोपवीत रचनाऽऽदि मैथिलवालिकाऽऽचरणादिकं समुत्कृष्टया वाचोभङ्ग्या वर्णयता कविना प्रकाशं नीता प्रशस्ता मैथिलवालिकानां वाल्याऽवस्था। अन्तराऽन्तरा श्लेषमयी च रचना नितरां चमत्करोति चेतः। सफलयां चैतया रचनया सर्वथा स्थिरी कृतं स्वर्गताया अपि राज्ञ्याः चन्द्रावती देव्याः कीर्त्तिशरीरम्।

यद्यपि कविरसौ ममोत्कृष्टशिष्याणामन्यतमः। तथाऽपि मध्ये बहोः कालात्कलिकातामधिवसतो मम नासीदेवं विदितं यत्प्राचीन नवीन न्याय वैशेषिक-वेदान्तादिदर्शननिष्णातोऽसौ कवित्वेप्येतादृशीं परां प्रौढ़तामुपयात इति। कृतिरियमेतस्य सर्वथा भाजनं प्रशंसाया इति

श्री फणिभूषण तर्कवागीशस्य

कलकत्ता युनिभरसिटीक प्रधान दार्शनिक प्रोफेसर महामहोपाध्याय श्रीमान् फणिभूषण तर्क-वागीशजी क बहुमूल्य सम्मति

—o—

पं. श्रीआनन्दझा न्यायाचार्य रचित चन्द्रावती चरित कैं देखि हमर हृदय बड़ सन्तुष्ट भेल अछि । एहि काव्य मे रहनिहारि स्पष्ट मधुरता, व्याप्त अर्थगम्भीरता, पसरल श्रवणमनोहरता, विस्तृत अलङ्कार प्रचुरता, एवं सर्वत्र विद्यमान सरलता, एहि कविक महाकाव्य निर्माण समर्थता क सर्वथा द्योतन कैरहलि अछि ।

फूल तोड़ब सराइबाटी माजब, महेशवाणी गैवाक अभ्यास करब, जनौ काटब आदि मैथिल वालिका सम्बन्धी आचरण कैं उत्कृष्ट शैली सँ वर्णन कैनिहार एहि कवि सँ, मैथिल वालिका लोकनिक प्रशंसनीय वल्याऽवस्था आदि पर वेस प्रकाश देल गेल अछि । बोच बीच मे ऐनिहारि श्लेष (अर्थद्वय) प्रचुर रचना चित्त कैं खूब चमत्कृत करैछ । एहि सफल रचना सँ स्वर्गहुँ जलि गेनिहारि रानी चन्द्रावती देवी क कोर्त्तिशरीर सर्वथा स्थिर कैल गेल अछि ।

यद्यपि ई कवि हमर सप्रतिभ शिष्यहिंक अन्तर्गत एक थिकाह किन्तु एम्हर आबि वहुत दिन सँ कलकत्ता क वासी भै जैवाक कारण ई एहिरूपैं ज्ञात नहिं छल जे प्राचीन नवीन न्याय वैशेषिक वेदान्त आदि दर्शन मे निष्णात रहैत ई, कवित्वहुँ मे एतेक उत्कट कोटिक प्रौढता प्राप्त कैने छथि । हिनक ई रचना सर्वथा प्रशंसनीय अछि । इति

श्री फणिभूषण तर्कवागीश

प्राक्कथन ।

हरिहर-सत्कृत-चरणा तरुणनिशाऽधीश-सप्रभाऽऽभरणा ।
अरुणा काचन करुणा दलिताऽऽवरणा हृदि स्फुरतु ॥

ई प्रायः सभ लोक जनैछ जे परोपकार क गणना पैघ पुण्य मे अछि । एहन अवस्था मे ओहू व्यक्ति कैं महत्व देब अनिवार्य्य होइछ जे स्वार्थ त्याग कै अपन हृदय कैं परोपकार दिस लगवैछ । हमरा जनैत इहो कहब अत्युक्ति पथ पर विचरण नहि करत जे परोपकारी जीव सँ भगवानहुँ कैं सहायता भेटैछ । कारण भगवान क माथ पर जाहि विश्व क भरण भार लादल अछि तदन्तर्गत किछु लोक क भरण क ओ सम्पादन करैछ । एही दिस दृक्पात करैत सम्भवतः भगवान् श्रीकृष्ण ई कहिगेल छथि जे—

यद्यद्विभूतिमत्सत्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं ममतेजोंऽशसम्भवम् ॥

रानीचन्द्रायती केहनि परोपकारपरा छलीहि अछि; एकर परिचय वर्त्तमान मैथिल जनता तथा अन्यो बहुसंख्यक जनता कैं छैक । तथा ओहि लोक कैं समय समय पर होइतहुँ रहतैक जे हुनक मूर्त्तिमत्कीर्त्ति श्यामा मन्दिर कैं देखि सकत । परन्तु जाहि जनता क ऊपकार क हेतु ओ एतेकटा त्याग कै गेलीहि तकर कर्त्तव्य की एतबहि धरि सीमित रहि जाइछ जे ओहि सँ लाभ उठावै ? ई भाव हमर तुच्छ हृदय मे अनेक दिन उत्थित भेल जे हमरा हुनक एहि संक्षिप्त जीवन वृत्तक उल्लेख करबाक हेतु प्रवृत्त कैए कैं छोड़लक ।

काव्यप्रकाशकार आचार्य्य मम्मट यद्यपि लिखि गेल छथि जे
" काव्यं यशसेऽर्थकृते "

परन्तु " यशसे " तँ तखन हो यदि तेहन हो । " अर्थकृते " क आब समय नहि । विशेषतः संस्कृत काव्य क हेतु । उचिते भला जाहि

भाषा कैं सभ लोक मृत भाषा कहै ताहू मे काव्य क निर्म्माण और पुरस्कार चर्चा ? किन्तु किछु होओ " शिवेतरक्षतये " कैं के हटा सकैछ ? यदि ओ सत्त विभूति सम्पन्न सत्त्व छल, जकर चरित्र चित्रण क हेतु लेखनी उठलि अछि तँ नहि दृष्ट तँ अदृष्ट अशुभ क किछुने किछु क्षति भेनहि ।

आशा करैत छी जे एहि हृदयोद्गार पर ध्यान रखैत अनेक शङ्का शील हृदय एहि " नर काव्य " क सर्ज्जन क की प्रयोजन ? एहिउदय शील शङ्का क निराकरण मे समर्थ हैताह ।

बहूत लोक कैं एहि कृति मे बहूत दोष सुझतैन्हि । सम्भव थीक जे किछु काल क हेतु ओ सहस्राक्षहुँ क आसन ग्रहण करथि । परन्तु हम हुनका विनय पूर्वक आचार्य्य पुष्प दन्त क

"अथाऽवाच्यः सर्वः स्वप्रति परिणामाऽवधिगृणन्"

एही अमूल्य वचनदिस ध्यान देबाक निवेदन करबैन्हि ।

दोसर ईहो ध्यान देवा योग्य अछि जे हमरा जनैत स्वच्छ कागज पर अपन हृदय गत कालिमा क अङ्कने थीक कोनो विषय पर लेख लिखब। जकर साधक प्रायः ई बड़ पुष्ट प्रमाण मानल जाएत जे अपना कैं पैघ विद्वान् माननिहार बहूत लोक कोनो विषय पर लेख एहि हेतु नहि लिखैत छथि जे लोक ई नहि बुझि जाए जे "ओ एतबे जनैत छथि वा ओ एहने लिखैत छथि"। यदि एहि कल्याना मे किछुओ सत्य क प्रति विम्ब पड़ल हो तँ हमरा ई मानहि पड़त जे एहि मे एक नहि अनेक दोष हैत जकरा देखबा क हेतु हमर ज्ञानचक्षु रश्मि रहित अछि ।

प्रस्तुत पुस्तक मे संस्कृत पद्य क नीचाँ पद्यक साधारण भाव लैतहुँ जे स्वतन्त्र प्रक्रिया सँ मैथिली गद्य लिखल गेल अछि से पहिने अधिक लोक सँ एकरा सम्बद्ध करैबाक अभिप्रायैं हिन्दी मे लिखल गेल

छल। परन्तु बहूत मैथिली क अभ्युदयेच्छुक महानुभाव क आग्रह क अनुरोधैं फेर मैथिली मे लिखल गेल। कारण मैथिल होइत मैथिली क सम्बन्ध मे भेनिहार प्रस्ताव क अनुमोदन के नहि करत ?

आइ काल्हु क बहूत लोक कैं आलङ्कारिक वर्णन क अर्थ बूझि पड़ैत छैन्हि चापलूसी। जे स्थूल दृष्टिएँ देखला उत्तर किछु सङ्गताहो बुझना जाइछ। कारण नवशिक्षिता गृह देविओ लोकनि जखन आब धीरे धीरे अलङ्कार क परित्याग कै रहलि छथि, तखन कविते देवी किएक अलङ्कार धारण करतीह ? सभ लै जखन जवाना बदलैत छैक तखन कविता देवी कि संसार सँ वाहरि छथि ? "अङ्गी करोति यः काव्यं शव्दार्थावनलंङ्कती। असौ न मन्यते कस्मादनुष्ण मनलं कृती" ई पीयूषवर्ष क कथन की सभ दिन लागुए रहत ?

परन्तु सौभाग्य वा दुर्भाग्य वश ई क्षुद्र लेखक एहि सिद्धान्त क माननिहार लोक क नहि। अत एव एकरा पढ़निहार सज्जन क ओतै ई निवेदन कै देब अनुचित नहि हैत जे—एकरा काव्य दृष्टि रखैत पढ़थि।

संस्कृत साहित्य सेवी क ओतैं तँ सम्भवतः एहि निवेदन क प्रयोजन नहि हैत, कारण हुनका लोकनि कैं अलङ्कार-प्रचुर साहित्य सँ सम्बन्ध वा ओहिमे अभिरुचि रहितहिं छैन्हि। अतएव ओ प्रायः कखनहु ई नहि कहताह जे अलङ्कारिक वर्णन थीक मिथ्या क प्रचार वा व्यक्ति विशेष कैं प्रसन्न करबाक उपचार। कारण हुनका लोकनि क हृदय एहि सिद्धान्त क खूब मनन कैने अछि जे—आलङ्कारिक वर्णन क सम्मिश्रण भेनहु इतिहास, इतिहासे रहैछ। एकरा यदि दोसर शब्दैं कहै चाही तँ ई कहि सकैत छी जे ऐतिहासिक काव्य की ? इतिहास क

भाष्य । यैह कारण अछि जे आदिकवि क रामायण आलाङ्कारिक वर्णन सँ ओत प्रोत होइतहुँ इतिहासे कहबैछ । विचारि कँ देखला उत्तर ई उचितो बूझि पड़त । कारण मनन-पूर्वक पढ़ला उत्तर वर्णन ओ वर्णनीय क वास्तव स्वरूप स्पष्टे बूझि पड़ैछ ।

यद्यपि किछु अपन सहयोगी बन्धु क विचारैं, जनिक हाथ एकर प्रकाशनो विभाग पर छलैन्हि, वहुत अलङ्कार प्रचुर पद्य एहि सँ हटाइए देल । जाहि कारणे पुस्तक क आकार एक तेहाइ ओहिना क्षीण भै गेल जेना अनेक दिन क अनशन क अनन्तर सत्याग्रही क शरीर । तथापि जे रहिगेल तकरा हेतु एतवा कहिदेव आवश्यक बुझना गेल ।

एहि जीवन चरित क प्रणयन-काल ग्रन्थ मे लिखले अछि किन्तु स्थान स्थान पर लिखल गेल टिप्पणी पुस्तक-प्रकाशन-काल मे लिखल गेल अछि ।

ई हम पहिनहुँ लिखि आएल छी जे " एहि मे सम्भव थिक जे एक नहि अनेक दोष हो " तकरा अन्त मे दोहरा देव हम आवश्यक कर्त्तव्य बुझैत छी ।

एहि चरित्र चित्रण सँ यदि किछु लोक क हृदय, किछुओ मनोरञ्जन तथा दिव्य भावा पन्ना रानी चन्द्रावती क उत्कृष्ट जीवन सँ परिचय प्राप्त कै सकल तँ एकर प्रणयन कैं हम सफल बुझब । इति ।

विनीत लेखक—



(मङ्गलम्)

यस्याः कोटिशशाङ्करम्यनखरप्रोद्भासि–पादाम्बुज-
प्रक्षेपस्खलदुज्वलोज्वलरजोराजि विभूतिच्छलात् ।
धृत्वा शूलभृदप्यभून्ननु महामृत्युञ्जयो भूतिमान्
सा भव्यानुभवाय भातु हृदये भीमाऽऽकृतिर्भारती ॥

❋ चन्द्रावती चरितम् ❋



याऽऽसीन्ननन्दनरम्यचन्दनवनीदोलोल्लसत्कामिनी-
वीणा-गुञ्जित मञ्जु-रञ्जित-बृहत्सङ्गीत-गङ्गाजलैः ।
शुद्धाऽऽबद्धचलत्सुकेतु-भवनाऽऽभोगाभिमानोन्नत-
ग्रीवा हास्यवतीव शक्रनगरे सुश्री बनैली पुरी ॥

(१)

प्राचीन बनैली क अस्तित्व आधुनिक बनैली सँ किछुए दूर पर छल। एकर शोभा अत्यन्त मनोहर छल । स्वर्ग यहि भगवती मन्दाकिनी क जल-सम्बन्धेँ विशुद्धता रखैत छथि तँ ई हो नगर ओहि बृहत्सङ्गीत गङ्गा-जल क सम्बधेँ विशुद्ध छल, जे स्थान स्थान पर चन्दन-निकुञ्ज-निर्मित झूला पर आसीना रमणीयाऽकृति रमणी लोकनि क मुख कमल सँ वहार भै, वीणा क झंकार सँ अनुगत एवं राग पूर्ण हैवाक कारण द्विगुण मोहकता कैँ प्राप्त कै रहल छल । चञ्चल पताका सँ सुशोभित गिरिशृंग क समान उन्नत तथा विस्तृत शुभ्र राजमहल सभ कैँ देखि देखनिहार क हृदय कैँ एहने बूझि पड़ैत छलैक जेना ई नगर स्वर्ग क हँसैत हो।

तत्रोन्मल्ल-मतल्लिकोन्नतदृढ़स्कन्धस्सुभीमाऽऽकृतिः
शस्त्राऽऽसार विशीर्ण हिंस्र निवहस्सत्साहसाऽऽवासभूः।
श्रीमन्मैथिल-विप्रवंश-तिलको झोपाऽभिधः सत्कृतः,
सम्राड्भिर्नितरां "गदाधर" इति ख्यातोऽवनीशोऽभवत्॥

(२)

उक्त वनैली नगर क अधिपति प्राचीन काल मे "गदाधरझा" छलाह। राजा होइतहुँ हिनका मे विलासिता क मात्रा एकदम नहि छल। हिनक व्यायामशील शरीर तत्कालीन पैघ पैघ पहलवानहुँ क शरीर सँ कम दृढ़ अथवा कम सुन्दर नहि छल। ई उत्कृष्ट साहसी तथा विशिष्ट शिकारी छलाह। अपन अस्त्रक प्रहारेँ असंख्य दुष्ट वन-जन्तु कैँ धराशायी बनौने छलाह। राजा होइतहुँ हिनका मे विशेषता ई छल जे हिनक जन्म ओहि मैथिल ब्राह्मण वंश मे भेल छल जे अत्यन्त पवित्र छल। ई पैघ योद्धा छलाह जकर फल ई भेलैन्हि जे पठान सम्राट् गयासुद्दीन तुगलक सँ पैघ भू-सम्पत्ति प्राप्त कैलन्हि। उक्त पठान सम्राट् क दरबार मे हिनक प्रवेश वंगाल क नवाब नाशिरुद्दीन क प्रसन्नता सँ भेल छलैन्हि। ई संस्कृतक नीक विद्वान छलाह। बहूत लोक क मत ई अछि जे ई नहि बनैली आएल छलाह, हिनक वास स्थान बैगनी नवादा छलैन्हि। एकरा बाद ई लोकनि क्रमिक राजा भेलाह।

२ हरिकरझा ३ श्रीकरझा ४ बुद्धिकरझा ५ रामभद्रझा ६ भरतझा ७ रामकृष्णझा ८ विश्वनाथझा ९ देवानन्दझा।

तद्वंशे विशदे प्रशस्त-गुणवानैश्वर्य्य-शाली महा-
कायस्तीक्ष्णकृपाण-पाणि रहित-प्रीण-प्रयाणोद्यमः।
युद्धे भारत-शासकस्य वहुशः, साहाय्य-कारी धनै-
र्विख्यातस्समभूदिलासु परमानन्दाऽभिधो भूमिपः॥

(३)

एही पवित्र वंश मे देवानन्दझा क वाद परमानन्दझा राजा भेलाह। ईहो गुण क केन्द्र छलाह। हिनको विख्याति ओहन नहि छल जे अव्यापक हो। हिनक कर-कमल ओहि "चन्द्रहास" नाम कैं चरितार्थ कैनिहार कृपाण सँ कखनहुँ पृथक् नहि रहै चाहैत छल जकर सहायत ओ शत्रुक प्राण कैं शरीर सँ वाहर निकलवाक हेतु रास्ता बनैवा में उद्यत होइत छल। तत्कालीन यवन सम्राट् हिनक शौर्य्य वीर्य्य तथा धन सँ कम सहाय्य नहि पौने छलाह। हिनक जन्म १७२० ई० मे भेल छल। संस्कृत फारसी ओ अरबी क नीक ज्ञाता तथा कुस्ती ओ शिकार क अत्यन्त प्रिय छलाह। अपन विद्वत्ता ओ कार्य्य-शीलता क बलैं अजीमाबाद क नवाब सँ फकराबाद क चौधरी बनाओल गेल छलाह। एही कारणे पहिनें झा उपाधि रहितहुँ एहिठाम सँ एहि वंश क लोक किछु काल क हेतु "चौधरी" कहावै लगलाह।

यवन-नृप-समर्पितं हजारी-
पदमति-गौरव-सूचकं दधानः ।
प्रतिदिवसमवर्द्धयत्, स्वकीया-
मिव तनयां सनयामखण्डलक्ष्मीम् ।।

(४)

हिनक युद्धि कुशलता ओ सहायता पर प्रसन्न भै देहली-दरवार हिनका "हजारी-मनसवदार" क उच्च उपाधि दै सम्मानित कैलक । चौधरी उपाधि पहिने पाविए चुकल छलाह अतएव ई हजारी चौधरी नाम सँ प्रसिद्ध भै गेलाह । हजारी उपाधि साही-दरवार सँ ओहि व्यक्ति कैं भेटैत छलैक जे एक हजार सेना क नायक भै युद्ध स्थल मे अपन पराक्रम क उपयोग देखवैत छल । चौधरी उपाधि धनी लोकक परिचायक छल । साही-दरवार मे हिनक प्रवेश क कारण पुनिया क फौजदार नवाब क प्रसन्नता छल । जनश्रुति ई अछि जे ई एक एहन पैघ वाघ कैं शिकार मे धराशायी बनौलन्हि जे उक्त फौजदार नवाब हिनका ऊपर बड़ प्रसन्न भेल और साही-दरवार मे हिनक प्रशंसा कै ओतै हिनक प्रवेश करौलक । एहि सँ पूर्ववर्त्ती हिनक वंशज लोकनि अपन प्राचीन निवास बैगनी नवादहु कैं एकदम नहि छोड़ने छलाह किन्तु ई एकदम ओहि ठाम सँ सम्बन्ध विच्छेद कै लेलन्हि । एकर कारण लोक अजीमावाद नबाव क अप्रसन्नता कहैछ । ई अपन राज लक्ष्मी कैं दिनाऽनुदिन खूब बढ़ौलन्हि ।



राजा वेदानन्द सिंह, बनैली इस्टेट

तत्पुत्रस्तु दुलार सिंह-नृपतिः ख्याता महीमण्डले
दोव्यत्पार्वण चन्द्रनिन्दुक यशस्संशोभिताऽऽशामुखः।
राज्य प्रोन्मद कुम्भि-कुम्भ-विगलन्नीत्यङ्कुशः संस्कृतां
बुद्धिं बिभ्रदशेष-दोष-विगम-प्रोद्यत्प्रतापोऽभवत् ॥

(५)

राजा परमानंन्द चौधरी क वालक राजा दुलार सिंह भेलाह। ईहो अपन गुणगण क वलैं देशविश्रुत भेलाह। देदीप्यमान पौर्णमासी चन्द्रहुँ कैं हँसनिहार हिनक यशः स्तोम सँ समस्त दिगङ्गना क मुख कमल शोभित भै रहल छल। हिनक विशद नीति अखण्डराज्य स्वरुप गजेन्द्र क मस्तक पर अङ्कुश क काज करैत छल। एवं वुद्धि अत्यन्त परिष्कृत छल। दोष-लेश-रहित हैवाक कारण हिनक प्रताप भगवान् अंशुमाली जकाँ प्रतिदिन उदयशील छल। एहि कुल मे सिंह उपाधि क श्रीगणेश अनन्त काल क हेतु एही ठाम सँ भेल। हिनक जन्म आनुमानिक १७५० ईसवी मे छल। ई व्यापारक उत्कृष्ट प्रेमी छलाह। नेपाल सँ वड़ी अणाची, साँखु, सागबान आदि, विक्रयार्थ देशान्तर मे पठैवाक व्यापार स्थापित कैने छलाह।

आसीदासिन्धुतीर-स्फुरदमर-यशश्चन्द्रमोद्भासितश्रीः
श्रीवेदानन्द सिंहः, सकल नृपरिपुध्वान्त-विध्वंस-हंसः।
नानादेशप्रजाभिः प्रमुदितहृदयैर्देववत्पूजिताऽऽशः,
तत्पुत्रोऽतिक्रियावानमितमतिगतिःपुर्नियामण्डलस्थः

(६)

राजा दुलार सिंह क पुत्र राजा वेदानन्द सिंह भेलाह। हिनक राज लक्ष्मी आसमुद्र-सञ्चारी अमर-यशःस्वरुप चन्द्रमा क दीप्ति सँ शोभित छलीहि। समस्त विरोधी राजवर्ग स्वरूप अन्धकार क विनाशार्थ ई भगवान सहस्रकिरण क समान भासित भै रहल छलाह। पुर्निया मण्डलस्थ होइतहुँ हिनक राज्य आसाम विहार ओ वंगाल क अनेक भू-भाग तक व्याप्त भै.चुकल छल। यत्रत्य प्रजावर्ग अपन प्रफुल्ल हृदय सँ हिनक सन्निहित दिशा कैं ओहिना पूज्य दृष्टिएँ देखैत छल जेना क्यौ भक्त पुरुष अपन इष्टदेव क मन्दिर-सन्निहित दिशा कैं। हिनक बुद्धि गति अप्रतिहत छल एवं राजा होइतहुँ ई एक नीक वैदिक-कर्मनिष्ठ छलाह। हिनक जन्म १७७८ ई. मे ओ मृत्यु १८५१ ई. मे भेल छल। ई दू भाँई छलाह। दोसर भाँई क नाम छलैन्हि रुद्रानन्द सिंह। किन्तु ई हुनक वैमात्रेय छलाह। हिनकहिं सँ श्रीनगर राज्य क श्रीगणेश भेल। राजा वेदानन्द सिंह अत्यन्त उद्यम शील लोक छलाह। खेती मे हिनका बड़ रुचि छल। हिनक विवाह भौरं ग्राम वासी मिथिला-राज्योपार्ज्जक-महेश ठाकुर क प्रथम पुत्र गोपाल ठाकुर क वंशज उग्रसिंह ठाकुर क कन्या मे भेल छल। राजा वेदानन्द सिंह आयुर्वेद क पूर्ण ज्ञाता छलाह। जकर परिचय एहि सँ भेटैछ जे " वेदानन्द विनोद " नाम क नीक वैद्यक ग्रन्थ क निर्माण कैने छलाह।

जातस्ताताऽनुकारी त्रिभुवनवितताऽनन्तदानाम्बुधारा
सम्मग्नाऽशेष-लोकोत्तर-चरित-लसत्कर्णदान-प्रशंसः ।
श्री लीलानन्द सिंहः, सहृदय-हृदयव्योम-पीयूषमाली
तस्मात्कालीपदाब्जोत्थित-विमलरजोभूतिभृद्भालदेशः।

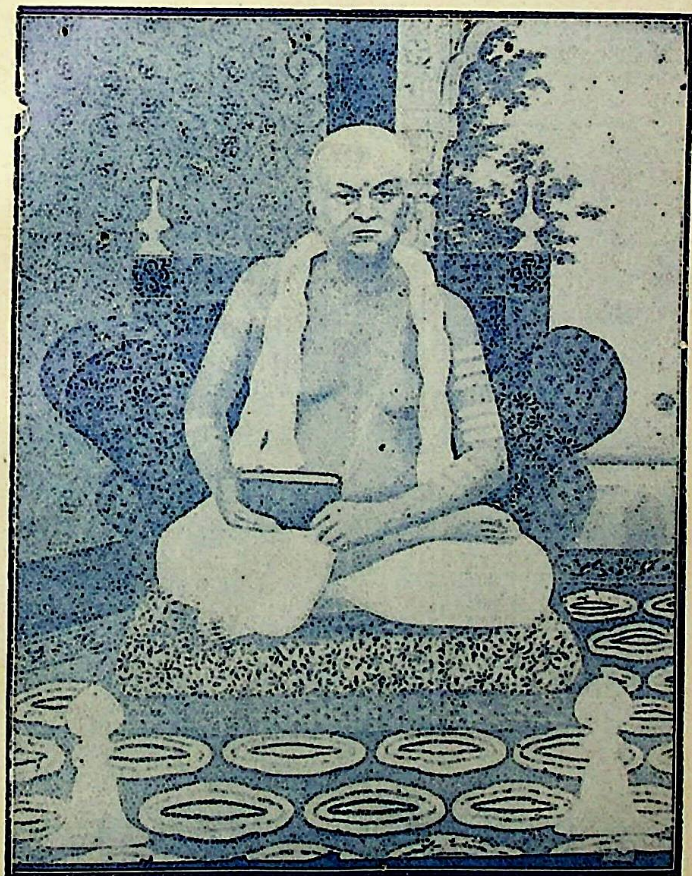
(७)

राजा वेदानन्दसिंह क बालक राजा लीलानन्दसिंह भेलाह। ई अपन पिता क पवित्र चरित्र क अनुकरण मे सर्वथा तत्पर छलाह। ओना तँ हिनका मे राजोचित सभ गुण पूर्ण रूपहिं छल तत्रापि दान गुण सर्वाऽतिशायी कहल जाइत छल। हिनक विस्तीर्ण दान-जलधारा मे सभ सँ पैघ दानी कहौनिहार महारथी कर्णहुं क दान-यश जेना डूबै जाइत हो। हिनक दान सम्बन्धी आख्यान क सङ्कलन कैला उत्तर रोचक उपन्यास बनि सकैछ। सहृदय लोक क स्वच्छ हृदयाऽकाश मे ई पूर्ण चन्द्र क समान उदित छलाह। ई एक नीक उपासक छलाह। हिनक उज्वल कपार मे लागल भस्म, पद-वन्दन-प्राप्त भगवती भवानी क चरण कमल क पराग जकाँ भासित होइत छल। हिनक जन्म १८१६ ई० मे ओ मृत्यु १८८३ ई० मे भेल छल। हिनका तीनि विवाह छलैन्हि जाहि मे पार्वती देवी सँ राजा पद्मानन्द सिंह क, चन्द्रेश्वरी देवी सँ कामाख्या दाई क ओ सीता देवी सँ राजाबहादुर कलानन्द सिंह ओ रा. ब.. कीर्त्त्यानन्द सिंह क सन सन्तति रत्न क उत्पत्ति भेल छल। रानी पार्वती देवी काशी मे काली मन्दिर क निर्माण कराओल जाहि मे भगवती काली ओ भगवान् शङ्कर क भोग राग तथा ब्राह्मण क भोजन निमित्त जमीन्दारी खरीदि देल।

तत्सूनुः पद्मसद्माचल-चरण-रणन्नूपुराऽऽकृष्टदृष्टि-र्वृष्टिं स्रष्टा विसृष्टेऽखिलधनरहिते रत्नराशेर्विधातुं । श्रीपद्मानन्दसिंहस्सकलशशधराऽऽकारकीर्त्तिर्मनस्वी तेजस्वी विप्रकृत्याऽऽचरणरतमतिः, प्राभवद्भूमिपालः ॥

(८)

राजा लीलानन्द सिंह क वालक राजा पद्मानन्द सिंह भेलाह। ई अत्यन्त मनस्वी ओ प्रतापी छलाह। ब्राह्मणोचित नित्य नैमित्तिक कर्म क अनुष्ठान मे ई पूर्ण सावधान रहैत छलाह। ई एहन सद्व्यय शील भेलाह जे भगवती लक्ष्मी क चलैत चरण क ध्वनिशील पाँजेव मे हिनक दृष्टि जेना आकृष्ट भै पड़ल हो। किछु लोक क ई कल्पना छल जे विधाता जखन अपना हाथैं वनाओल असंख्य दरिद्र क दयनीय-दशा देखि पश्चात्ताप पौलन्हि तखन ओहि दरिद्र सभ क घर रत्न क वर्षा करवा क हेतु हिनक निर्माण कैल। हिनक जन्म १८५५ ई० मे ओ मरण १६१२ ई० मे भेल छल। मैथिल मे ई सर्व प्रथम राजाबहादुर क उपाधि पौने छलाह। ई पैघ भक्त छलाह। खास कँ श्रीवैद्यनाथ क वड़ भक्त छलाह। ओतै एक पैघ प्रवेश द्वार वनौने छलाह। तथा मन्दिर मे हाथी दाँत क केवाड़ लगवौने छलाह।



कलिकर्ण राजा लीलानन्द सिंह

चन्द्रः श्रीशम्भुमौलिस्फुरदमरधुनी–तीरनीरोपसेवी
कृत्वाऽऽङ्कस्याऽपहृत्यै हरनयनशिखिन्यङ्गहोमं पवित्रः।
माराऽऽकारः, कुमारस्स्वमतिततिजिताऽशेषराजन्यवर्गः
श्रीचन्द्रानन्दसिंहस्समभवदखिलाऽऽनन्दनस्तस्यसूनुः।

(६)

राजा पद्मानन्द सिंह क वालक कुमार चन्द्रानन्द सिंह भेलाह हिनक सौन्दर्य्य उत्कृष्ट कोटिक छल। वाल्यावस्थहिं सँ हिनक बुद्धि विशदता मे अन्य राजालोकनि क बुद्धि सँ कतेक् बढ़ल चढ़ल छल। हिनका देखि, के सहृदय नहि आनन्द पबैत छल ? सरस हृदय मे प्रायः ई कल्पना उठैत छल जे पीयूषमाली-चन्द्रमा अनेक दिन पर्य्यन्त भगवान् शङ्कर क जटाजूट–मन्दाकिनी क किनार मे जलाहार मात्र करैत तपस्या कैनहुँ जखन कलंक-मुक्त नहि भेलाह तखन निकटवर्त्ती श्रीमहादेव क तृतीय नेत्र स्वरुप अग्नि मे अपन अङ्ग क हवन कै देल। और निष्कलङ्क भै गेला उत्तर वैह प्रायः नवीन शरीर धारण कै कुमार चन्द्रानन्द सिंह रूप मे अवतीर्ण भेल छथि। हिनक जन्म सन् १२६० शाल मे भेल छल।

युवतामेत्य कुमारः,
क्वैलख-नगरे प्रशस्त-कुलयुक्ताम् ।
उग्रीशर्म-तनूजां
तामथ जग्राह गृह्य-विधिनाऽसौ ॥

(१०)

कुमार चन्द्रानन्द सिंह बाल्य क अत्यय कै यौवन संसार मे पदार्पण कैलन्हि । अतएव हिनका सँ सम्बन्ध जोड़ि "युवराज" उपाधिओ कृतार्थ भेल । एखन धरि ई पूर्ण ब्रह्मचर्य्य क सङ्ग छलाह तथा राजोचित शिक्षा पावि रहल छलाह । परन्तु आब समावर्त्तनो अपन समय किएक छोड़त ? अतः पूज्य गुरुजन क आदेशाऽनुसार क्वैलख नगर निवासी प्रशस्त-वंशोद्भव उग्रीझा महोदय क सुलक्षणा कन्या सँ वैदिक विधान क अनुसार हिनक विवाह संस्कार सम्पन्न भेल ।

या तातलोचन-चकोरमुदं विवृद्धा-
मातन्वती प्रतिदिनं खलु वृद्धिमाप ।
वर्षाऽत्ययेन रजसा स्तनयित्नुना वा
शून्ये नभस्यमल-शारदचन्द्रिकेव ॥

(११)

कुमार चन्द्रानन्द सिंह क विवाह ओही शुभलक्षणा कन्या सँ भेल जे अपन पिता क नयन चकोर कैं आनन्द दैत ओहिना प्रतिदिन बढ़ि विवाह योग्यता कैं प्राप्त कैने छलीहि जेना वर्षा ऋतुक पश्चात् मेघ वा धूली सँ रहित शुभ्र आकाश क बीच उगनिहार चन्द्रमा क अमल कला। अभिप्राय ई जे रानी साहेब क शरीर बाल्यावस्थहिं सँ पूर्ण दीप्त तथा वर्द्धिष्णु छल। जकरा देखि पिता क लोचन चकोर युगल कृत कृत्य भै जाइत छल।

सीताऽऽदि दिव्यचरितोत्तमकन्यकानां
यः प्राभवद्विमलतावहवाल्य-कालः।
भ्रान्तं कदाचिदपि नैव यदीय-वाल्य-
कालेन तच्चरण-चिन्हित-मार्गगत्वे॥

(१२)

एहि शुभलक्षणा कुमार वधू क अतीत वाल्य-काल अत्यन्त पवित्र छल। जकरा दोसर शब्दैं एहि रूपैं कहल जा सकैछ जे अपन दिव्य आचरण क वलैं उत्तम कन्या कहौनिहारि जे सीता सावित्री दमयन्ती आदि कन्या एहि भारत वर्ष मे भै गेलि छथि, हुनक वाल्य-काल क चरण-चिह्नित मार्ग क अनुशरण करवा मे हिनक वाल्य-काल कहिओ भ्रान्त नहि होमै पौलक। सारांश ई भेल जे हिनको वाल्य कालीन आचरण ओहिना प्रशंसनीय छल जेना वाल्याऽवस्थापन्ना सीता सावित्री आदि क श्लाघनीय वाल्य-कालीन आचरण।

यत्र क्व चिद्गतिजनिः क्वचभक्तिवार्त्ता-
ऽन्येषां परं लसति लौल्यमखण्डमेव ।
तच्छैशवेऽपि किल यद्धृदये सुभक्ति-
भागीरथी प्रवहति स्म समृद्धवेगा ॥

(१३)

जाहि वाल्य काल मे अन्य लोक क हृदय मे व्यावहारिको ज्ञान क विकाश नहि भेल रहैछ फेर भक्ति क तँ कथे की ? प्रत्युत चञ्चलता क अखण्ड साम्राज्य जमल रहैछ । ताहि वाल्य कालहुँ मे हिनक हृदय बीच भक्ति-भागीरथी क विमल धारा अविश्रान्त भावेँ वहि रहल छल । अभिप्राय ई भेल जे रानी साहेबा क विशुद्ध अन्तःकरण बीच पूर्वजन्मार्जित संस्कार वश भक्ति क अङ्कर वाल्यावस्थहिं सँ जमिगेल छल । जे आगाँ आबि महावृक्षक समान विस्तृत भै फुलैल ओ फड़ल ।

नीत्वा करे वेणुमयं करण्डं
ताताऽऽज्ञया पूजन-पुष्प-नेत्रो ।
उद्यानगा काश्यप-पुष्प-हेतो-
र्भाति स्म या वन्य-शकुन्तलेव ॥

(१४)

मिथिला मे ई व्यवहार प्रायः अधिक ठाम देखल जाइछ जे अविवाहिता छोटि छोटि कन्या भगवत्पूजनार्थ फूल तूलसी आदि तोड़ैत छथि, तथा माला आदि गथैत छथि। तदनुसार पिता क आदेश पावि जखन ई सुलक्षणा कन्या बाँस क फूलडाली लै फूल तोड़ै जाइत छलीहि तखन एहने बुझना जाइत छल जे तात महर्षि-कण्व क आदेश पावि वनवासिनी बालिका शकुन्तला पूजा क हेतु जेना फूल तोड़ैत होथि।

या मातृपाद-विलसत्कटभागविष्टा
शिष्टाऽभिनन्दित-सदाचरणैर्विशिष्टा ।
हृष्टाऽन्यपुष्ट-मधुरध्वनिभिः कदाचि-
न्मिष्टां मुहुर्हि रटति स्म महेशवाणीम् ॥

(१५)

मिथिला देश मे शिवभजन " महेशवाणी " शब्दैं व्यवहृत होइछ ई प्रायः वहुविदित अछि। अशिक्षित लोक एकरे " महेशमानी " कहैछ। स्त्री समाज एकर गान बड़ आदर पूर्वक करैछ। ईहो भाग्य-वती कन्या जनिक नाम गङ्गादेवी छल और पश्चात् भाग्य क वल कुमार चन्द्रानन्द सिंह क धर्म पत्नी भेलीहि माएक संग पटिया पर वैसि खूब महेशमानी क अभ्यास करैत छलीहि। हिनक कण्ठस्वरो ओहने मधुर छल जेहन प्रसन्न कोकिल क।

टिप्प०—महेशमानी गान मे हिनक आदर वाल्यावस्थहिं धरि नहि छल प्रत्युत आजीवन रहल। काशी जखन आबथि तखन अधिक काल काशी-वासिनी मैथिलानी सभ सँ गववाबथि ओ अपनहुँ गाबथि।

पीनप्रवाल-लतिकाभिरिवाऽङ्गुलीभि-
र्नृत्याऽऽकुलां विदधती सितचक्रिकां या ।
वामेन सूत्र-जननक्षम-तूल-पिण्डं
यज्ञोपवीत-रचना-पटुतामगच्छत् ॥

(१६)

आब तँ ई प्रथा शिथिल भेल जाइछ तथापि लुप्त नहि भेल अछि जे मैथिल ब्राह्मण क घर घर मे ब्रह्मसूत्र-यज्ञोपवीत क निर्म्माण गृहदेवी लोकनि अपनहिं करैत छथि । बालिका लोकनि एकर पूर्ण अभ्यास करैत छथि, ई गङ्गो देवी एहि काजमे पाछाँ नहि छलीहि । इहो वामा हाथ मे वीरल तूर जे मिथिला मे पीरु कहल जाइछ, ओ दहिना हाथ मे हाथीदाँत क सुन्दर टकुरी लै ओकरा नचवैत यज्ञोपवीत क हेतु खूब सुन्दर सूत कटैत छलीहि ।



राजा बहादुर पद्मानन्द सिंह

प्रत्यूष एव शयनं परिहाय या तु
पूजार्थ-भाजन-परिष्कृति-लग्न-चित्ता ।
श्रीजानकीव गिरिजाऽर्चन-भाजनानि
संस्कुर्वती प्रभवति स्म जनेन दृष्टा ॥

(१७)

समय क एकटा पहन प्रभाव ँ गेल अछि जे सूर्य्योदय सँ पूर्व प्रायः विरले लोक निद्रा त्याग करैत छथि। यदि कदाचित् निद्रे हुनका त्यागि दोन्हि तैयो अनठौने पड़ल रहैत छथि। किन्तु गङ्गा देवी मे ई विशेषता छल जे ओ खूब भोरे ओछाओन छोड़ि उठि जाइत छलीहि। और ततबै नहि, शुचि शरीर भै पूजाक सराइ बाटी माजै लगैत छलीहि। जे देखि लोक कैं ओहिना देखना जाइत छलैक जे भगवती गिरिजा क पूजाहेतु भगवती जानकी जेना सराइ बाटी मजैत होथि। नास्तिकता क पूर्ण साम्राज्य कालहुँ मे मिथिला क स्त्री समाज मे धार्मिक भावना एतेक प्रबल अछि जे हृदयमे भक्ति क सञ्चारार्थ सम्पन्नो घरक देवी लोकनि अपन बालिका सँ पूजा सम्बन्धी कार्य्य नियमित रूपैं करबैत छथि। ओ बालिका लोकनि खुसी सँ ठाम करब, सराइ बाटी माजब, महादेव बनैब आदिक अभ्यास करैत छथि।

शेषो ऽप्यशेष-मुख-तामरसं स्वकीयं
व्यापारयन् प्रतिपलं प्रभवेत्समर्थः ।
नोचेत्कथा भवतु का चतुराननस्य
तन्मातृ-तात-नियतिस्तुति-संविधाने ॥

(१८)

नेना-भुटका प्रायः अधिक लोक कैं होइतहिं छैक । किन्तु योग्य गुणी सन्तति हैव बड़ तपस्या और पुण्य क फल होइछ । "गङ्गा" अपन माता पिता क पूर्ण तपस्या ओ पुण्यहिं क फल स्वरूप छलीहि । कल्पना शील क हृदय तँ हिनक माता पिता क भाग्य क एतेक वर्णन करैत छल जे चारि मात्र मुख मे चारिमात्र जिह्वा रखनिहार ब्रह्मा क कोन कथा जे हजार मुह मे दुई हजार जिह्वा रखनिहार शेष नागो हिनक माता-पिता क भाग्य वर्णन नहि कै सकैत छलाह ।

या दिङ्मिते वयसि भाग्यवती विनैव
पितृ-प्रकृष्ट-वर-मार्गण-जात-तापम् ।
जाता नरेन्द्र-रमणी रमणीय-मूर्त्ति-
र्वैकुण्ठ-मन्दिर-गता कमलाऽऽल्येव ॥

(१६)

योग्य वर क अन्वेषण क हेतु पिता वा अन्य बन्धु बान्धव के जे कष्ट उठावैं पड़ैत छैन्हि ताहि सँ प्रायः अधिक लोक जे कि कन्या क हिताऽहित पर ध्यान रखनिहार हैताह अवश्य परिचित हैताह । किन्तु भाग्यवती गङ्गा तेहनि नहि छलीहि जे पिता कैं हिनक कन्यादानोपयुक्त वर क अन्वेषणार्थ कष्ट उठावैं पड़ैन्हि । अनायास हिनक विवाह १० वर्षक अवस्था मे कुमार चन्द्रानन्द सिंह क सङ्ग भै गेल । जकर अनन्तर रमणीय-मूर्त्ति गङ्गादेवी उक्त कुमार साहेब क सान्निध्य पाबि ओहिना शोभिता भेलीहि जेना भगवान विष्णु क सान्निध्य प्राप्त कैने भगवती लक्ष्मी ।

पाणिग्रहोऽसौ विन्ध्याद्रावेव सम्पन्नतांगतः ।
देवी-भक्तिमती यस्मादासी त्पद्मावती सती ॥

(२०)

कुमार चन्द्रानन्द सिंह क विवाह पुण्यमय विन्ध्याचलहिं मे सम्पन्न भेल। एकर कारण ई छल जे भगवती विन्ध्यवासिनी क चरण कमल मे कुमार-माता रानी पद्मावती क अपरिमित भक्ति छल। प्रत्येक वर्ष दूहू नवरात्र मे रानो पद्मावती क दिस सँ भगवती विन्ध्यवासिनी क विशाल पूजा कैल-जाइत छल। एहि बहु व्यय तथा आयास-साध्य पूजन क प्रबन्धभार वैदिकजी गिरिजादत्तझा क ऊपर छल। वैदिक जी एहि आचन्द्राऽर्क स्थायिनी कीर्त्ति क प्रवर्त्तक तथा सञ्चालक छलाह जकरा लोक "तारमन्दिर काशी" नामे कहैछ। एवं जतै भोजन कै सैकड़ों दीन मैथिल छात्र विद्याभ्यास कै रहल छथि ओ विद्वान भै देश देशान्तर में मिथिलाक कीर्त्ति-कौमुदी कैं विस्तृत कै रहल छथि ।

नृपकुलगरिमाणमादधाना
नृपतिसुताऽनुमतत्वभूषित श्रीः ।
अमरपुरपतेः शचीव तस्य
प्रमदकरी गृहमागता नवोढ़ा ॥

(२१)

विवाह क अनन्तर दैशिक प्रथा क अनुसार द्विरागमन कराओल गेल। बनैली राजमहलमे आइलि नव विवाहिता बधू यद्यपि कोनो राजवंश मे उत्पन्न नहिं छलीहि तथाऽपि हिनका मे राजमहिषीसमुचित गुणक अभाव नहि छल। जकर फल ई छल जे हिनक कान्तिक ऊपर कुमार क पूर्ण श्रद्धा छल। विशद राज भवन क बीच नवाऽऽगता बधू ओहिना शोभा पावि रहल छलीहि जेना कि अमरेन्द्र क भवन मे देवी शची।

नाम्नाऽऽकृत्या विशुद्धया च या सीद्गंगा पितुगृ हे।
सैवेदानीं पतिकुले ख्याता चन्द्रावतीत्यभूत् ॥

(२२)

जे एतेक दिन अपन पिता क घर मे केवल नामहिं "गङ्गा" नहि छलीहि अपितु सुन्दर आकृति ओ विशुद्ध आचरणहुँ क दृष्टि सँ "गङ्गे" छलीहि, से आब अपन पति देव क घर आबि "श्रीमती चन्द्रावतीदेवी" नामे व्यवहृता होमै लगलीहि। मिथिलहिं मे नहिं प्रायः आनो देशक ई प्रथा अछि जे सासुर मे नैहर क नाम सँ,विलक्षण नाम राखल जाइछ जाहि नामे नवाऽऽगता वधू सम्बोधिता होइत छथि। एकरे अनुसार नैहर क "गंगा" नाम क स्थान मे "चन्द्रावती" नाम राखल गेल। एहि कुल मे पुतहु क नाम पुत्र क नाम क अंश सँ सम्बद्ध रखवाक प्रथा पहिनहि सँ चल अबैत अछि।

किन्तु ई हो नाम राज काजहिं क हेतु उपयुक्त रहल। व्यवहारमे अधिकतर "शशिरमा" नाम प्रचलित छल। रानी चन्द्रावती क जन्म सम्बत १६६४ शाके १८१३ सन् १२६६ साल चैत्र शुक्ल चतुर्थी मे भेल छलैन्हि। ई चारि भाइ क छोटि छलीहि। भाइ क नाम क्रमिक मधुसूदनझा, पुरन्दर झा, गीतादत्त झा ओ श्रीदुर्गादत्त झा छलैन्हि। मधुसूदन झा ओ पुरन्दर झा विवाहादिक अनन्तर शीघ्र परलोक विदा भै गेलाह। गीतादत्त झा क देहान्त हुनका लोकनिक अपेक्षा बहुत पाँछा भेल। रानी सँ छोटि बहीनि दुइ गोटैं छलीहि। एक क नाम छलैन्हि "यमुना" ओ दोसरि गोटा क "सरस्वती"। यमुना देवीक विवाह कोइलखे निवासी पण्डित-प्रवर जानकीनाथ झा सँ भेल छल। हिनके वालक थिकाह श्रीउमानाथ झा जनिक चर्चा आत्तोठाम हैत। सरस्वती देवी क विवाह मनिआरीक प्रसिद्ध जमीन्दार ब्रजनन्दन ठाकुर सँ छल।

प्राप्याऽपि दुर्लभ-नरेन्द्रवधूपदं या
विद्युल्लता-सुभगमूर्त्तिमतीव लीला।
श्रीमन्नरेन्द्र-पदपङ्कज-मानसाऽपि
नैवाऽथ विस्मृतवती परमेशभक्तिम् ॥

(२३)

लोकगति प्रचुर परिमाण मे एही तरहक देखल जाइछ जे लोक जखन सुखी होइछ तखन भगवद्भक्ति ओकरा बिसरि जाइत छैक। किन्तु विद्युत्लताक समान विलक्षण कान्तिमती अथवा सुन्दर मूर्ति धारण कै आइलि लीला (क्रीड़ा) क समान हृदय ग्राहिणी ई राज पुत्र वधू, अपन विमल अन्तःकरण कैं राजकुमार चन्द्रानन्द सिंह क चरण कमल मे सर्वदा लगौने रहितहुँ भगवान क भक्ति कैं नहि बिसरने छलीहि। अभिप्राय ई जे हिनक विशुद्ध अन्तःकरणक बीच स्वामि-भक्ति-ओ भगवद्भक्ति दूहूँक सत्ता अविच्छिन्न छल।

नो वैजयन्त-विजयोन्नत-मैथिलेन्द्र-
सौधाऽभिराम-सुमगन्धित-कोष्ठ एव ।
या स्थानमाप परमुन्नत-नागरीणां
दीव्यत्तुषारकरजित्वर-मानसेऽपि ॥

(२४)

अधिकतर लोक मे विशेषतः स्त्री जातिमे ई दोष पाओल जाइछ जे विशिष्ठ उन्नति क-तँ कथे की जे साधरणो उन्नति प्राप्त भेने हृदय कैँ एतेक अभिमान पूर्ण बनालैछ जे लोक कैँ कनेको आँखितर नहि लवैछ। जकर परिणाम ई होइछ जे आनो लोक ओहन लोक क ओतै संद्भाव नहि रखैछ। किन्तु चन्द्रावतीदेवी क व्यवहार एहन अभिमान रहित एवं विनय पूर्ण छल जे ई राजा पद्मानन्दसिंह क वैजयन्त-विजयी राजमहलक सुन्दर एवं पुष्पगन्ध पूर्ण कोठलिअहिं टा मे स्थान नहि पौलन्हि किन्तु तत्रत्य समस्त महिला लोकनि क विशुद्ध अन्तकरणहुँ मे, जे विशदता सँ देदीप्यमान चन्द्र क किरणहुँ कैँ जितने छल।



कुमार बहादुर चन्द्रानन्द सिंह

या रक्षति स्म पतिदेव-सहोदरासु
वृत्तिं तथैव मधुमन्नवनीत मिष्टाम् ।
ताताऽऽलये पति-कुलाऽऽगमनात्तु पूर्वं
रम्यां यथा स्वभगिनीषु विवद्धरागाम् ॥

(२५)

पति गृह गेला उत्तर अधिकतर पुत्रवधू में ई विषय पाओल जाइछ जे अपन समान वयस ननदि आदि सँ झगड़ा झाँटी होइत रहैछ । किन्तु एहि चन्द्रावतीदेवी क व्यवहार एहि तरह क नहि छल । ई अपन ननदि आदिक ओतै ओहिना मक्खन सन कोमल ओ मधुक समान मधुर व्यवहार रखैत छलीहि, जेना सासुर आएव सँ पूर्व नैहर मे अपन बहीनि क ओतै ।

ता अप्यखण्डशशि मण्डल-तुल्य शोभा
यन्मिष्ट-वाक्य-विगलन्मधुजात-लोभाः ।
नो तत्यजुः क्वचिदपिक्षणमप्यतन्द्रा
यामिन्दु-सुन्दर-मुखीं गमने गजेन्द्राः ॥

(२६)

"प्रेम वा सद्भाव एकदिसाह नहि होइछ" एहि लोकोक्ति क अनुसार हिनक ननदि आदि तत्रत्य सहृदय स्त्री वर्गो एहि देवी चन्द्रावती में एतेक अनुरक्ता होइत गेलीहि जे हिनक अत्यन्त मधुर गप्प सुनबाक लोभैं जाग्रत् अवस्थामे कखनहुँ हिनका सँ फराक नहि होमै चाहैत छलीहि ।

नालङ्कृतिभ्यस्सुषमामवाप
याऽकृत्रिमां सुश्रियमादधाना।
परन्त्व मूल्याऽऽभरणानि रेजु-
र्यस्याः प्रवाल-प्रतिमाङ्गसङ्गात् ॥

(२७)

अकृत्रिम सुन्दरता एहन विशिष्ट वस्तु अछि जे लाखो टाका खर्च कैने ओकरा ओ लोक नहि पावि सकैछ जे जन्महिं सँ सुन्दर नहि अछि। देवी चन्द्रावती अपन पूर्व पुण्य क प्रभावें एहन सहज सुन्दरता कैं पौने छलीहि जे हीरा जवाहिरात क बहु मूल्य आभरण सँ हिनक सौन्दर्य वृद्धि नहि होइत छल। प्रत्युत ओ बहु मूल्य आभूषणो सभ हिनक मूङा क समान सुन्दर अङ्ग क सम्बन्धैंशोभित होइत छल।

विभिन्नकालप्रतिभासमानयोः
सदा शशाङ्कोत्पलयोर्विरोधः ।
इति प्रवादस्तु मृषा व्यधायि
दीव्यद्यदीयाऽऽननपङ्कजेन ॥

(२८)

राति मे चन्द्रमा उदय पवैत छथि किन्तु कमल सकुचल रहैछ । दिनमे कमल फुलाइछ किन्तु चन्द्रमा नहि रहैत छथि । जौं रहितहुँ छथि तँ पीअर भेल हतप्रभ । ई देखि सभ लोक क हृदय एहि निर्णय पर पहुँचैछ जे चन्द्रमा ओ कमल एहि दूहू मे पूर्ण विरोध अछि । किन्तु देवी चन्द्रावती क दिन राति प्रफुल्लित रहनिहार मुखकमल उक्त विरोध सम्बन्धी प्रवादक खण्डन नीक जकाँ कै रहल छल ।

लाक्षारसाऽकलितपादतला मृणाल-
गौरी कराम्बुज-विकाश-विभासि-देहा ।
याऽभान्नरेन्द्र-भवनोदर भासनाऽऽस्या
पद्माऽऽसनस्थितिमती कमलाऽऽलयेव ॥

(२६)

देवी चन्द्रावती अपन दीप्त मुख मण्डल क प्रभा सँ बनैली राजमहल कैं एहि रूपैं विभासित कै रहल छलीहि जे बहुत प्रबुद्धो लोक कैं ई भ्रम उत्पन्न भै उठैत छलैन्हि जे बनैली राजमहल मे स्वयं लक्ष्मी आवि वास कै रहलि छथि । भ्रमक कारण ई छल जे हिनक लाल पैर आलतक संयोगैं द्विगुणित रक्त भै ओहने बूझि पडैत छल जेना भग-वती लक्ष्मी क आधार-पद्म हो एवं दूहूँ बाँहि जेना गौर-वर्ण शरीर संलग्न मृणाल हो । और दूहूँ हाथ जेना भगवती लक्ष्मी क दूहूँ हाथ मे रहनिहार दू कमल हो ।

या प्रत्यहं जनक-दर्शन-हीन-नेत्रे
संमील्य निश्चलमतिर्गुरुराग-रक्ता ।
नाऽन्तर्विलोचनज-चिद्विषयं विधाय
तं नैव शान्तिमगमन्नृपतीन्द्रवामा ॥

(३०)

ई अधिकतर देखल जाइछ जे कन्या यदि अपन पूर्व पुण्य क प्रभावेँ पैघ घर क गृहणी बनौ तँ ओकरा नैहर क बन्धु बान्धव सभ मे पहिने जकाँ स्नेह नहिं रहै पबैत छैक। और कोन कथा जे अधिक लोक कैँ पिता पर्य्यन्त विसरि जाइत छैक। किन्तु देवी चन्द्रावती मे ई बात नहि छल। हिनक हृदयमे पितृभक्ति एतेक मात्रा मे छल जे बाह्य दृष्टिएँ अपन पितृ देव कैँ नहि देखि उद्विग्न भै उठैत छलीहि। अन्ततो गत्वा आँखि मूनि यावत् हुनक ध्यान नहि कै लैत छलीहि तावत् हिनक हृदय शान्त नहि होइत छल ।

यद्विस्तृते स्मृतिपटे जननी सदैव
पूज्यातिरक्तहृदया प्रतिभासते स्म ।
एवं यथाऽधुनिक चित्रपटे विभान्ति
चित्राणि लोचनहराण्यथ रङ्गमञ्चे ॥

(३१)

देवी चन्द्रावती क पवित्र हृदय क बीच पितृभक्ति क सङ्ग सङ्ग मातृभक्तिओ एतेक प्रचुर मात्रा मे छल जे हिनक विस्तृत स्मृति पट पर अत्यन्त अनुरागवती पूजनीया माता क चित्र ओहिना अङ्कित रहैत छल जेना सिनेमाघर क विस्तृत चित्र पट पर मनोहर चल चित्र ।

यद्भव्यवृत्ताऽवगमार्थमागता
पद्मावती सत्कृतिसुस्मिताऽऽस्या ।
देवीव काचिद्धिवशीकृताऽऽत्मा
भक्त्या विभातिस्म वरप्रदात्री ॥

(३२)

आधुनिक जगत मे ई दोष प्रायः अधिकतर देखलजाइछ जे सासु पुतहु मे मेल नहिं । ने सासुए ओहन स्नेह दृष्टि पुतहुपर रखैछ जेहन अपन वेटी पर । और ने पुतहुए अपन शासु पर ओहन पूज्य दृष्टि रखैछ जेहन माए पर । परन्तु रानी चन्द्रावती क विशुद्ध अन्तः करण बीच रानी पद्मावती क सम्बन्ध मे भेनिहारि भक्ति मातृभक्ति क अपेक्षा कनेको कम मात्रा मे नहि छल । जकर पुष्ट प्रमाण ई छल जे रानी पद्मावती जखन अपन पुत्र वधू क देखबाक हेतु अबैत छलीहि तँ हिनका सँ कैल गेल सत्कार सँ प्रसन्न भै हँसैत ओहिना देखना जाइत छलीहि जेना कोनो देवी भक्ति वश भक्त क अधीन भै प्रसन्नमुखी भेलि वर देवाक हेतु उपस्थिता भेलि होथि ।



राजा बहादुर कीर्त्त्यानन्द सिंह बी० ए०

समागता यन्निकटे विरेजिरे
पत्यालयात् प्रेमिननान्द्ववर्गाः ।
तथा यथा गाङ्गसमागमाय ताः
सरस्वती भानुसुताऽऽदि नद्यः ॥

(३३)

बहुत लोक क ई स्वभाव होइछ जे जकरा सँ घनिष्ठो मैत्री भेल हो अधिक काल पर्य्यन्त स्थानान्तरित भै गेला उत्तर ताहि व्यक्ति मे ओतेक अनुराग नहिं रहै पवैछ। परन्तु रानी चन्द्रावती मे ई बात नहि छल। जकर प्रमाण ई छल जे ननदि आदि अपेक्षित वर्ग सँ अनेक दिन क अनन्तरो भेट भेला उत्तर अत्यन्त प्रसन्न होइत छलीहि। और आगत ननदि प्रभृतिओ ओहिना हिनका सँ वेगैं आबि मिलैत छलीहि जेना यमुना प्रभृति नदी आबि गङ्गा सँ मिलैत होथि।

टिप्प०—रानी साहेबा कैं ननदि तीनि गोटैं छलथीन्हि। हीरा दाइ भवानी दाइ ओ मोती दाइ। जाहि मे प्रथम दू गोटैं निः सन्ताने एहि लोक सँ विदा भै गेलीहि। मोती दाइ क सन्तति श्रीभीमनाथ बाबू आदि छथि। जनिका लोकनि क विशेष परिचय आगाँ देल जाएत।

कलाऽति-भक्ति-प्रतिबद्ध-सख्यं
चन्द्रं समुद्वीक्ष्य मुदं वहन्ती ।
कलाऽति-भक्ति-प्रतिबद्ध-सख्यं
चन्द्रं समुद्वीक्ष्य मुदं वहन्ती ॥

(३४)

वहुत स्त्री क स्वभाव ई देखना जाइछ जे अपन स्वामी कैं बन्धु बान्धव में विशेषतः पित्ती पितिआइनि आदि क ओतए सद्भाव रखैत देखो तँ ओकरा नहि नीक लगैत छैक । किन्तु रानी चन्द्रावती मे एहि दोष क लेशो नहि छल । कुमार चन्द्रानन्दसिंह कैं राजा कलानन्दसिंह तथा रानी श्रीमती कलावती क ओतए अत्यन्त भक्ति सम्पन्न देखि खूब प्रसन्न होइत छलीहि ।

टिप्पणी—ई पद्य अनेकार्थक अछि । कारण, एहि ठाम "कला" शब्द राजा कलानन्दसिंह, रानी कलावती, ललित कला, एतेक अर्थ मे प्रयुक्त भेल अछि ।

एवं पक्षान्तरमे "कलाऽतिभक्ति" ई वाक्य "कल" मधुर शब्द मे भेनिहारि अत्यन्त भक्ति अर्थहुँ मे । चन्द्र शब्द चन्द्रमा ओ कुमार चन्द्रानन्दसिंह अर्थ मे । राजाकलानन्दसिंह क जन्म १८८० ई० मे ओ मरण १९२२ ई० मे भेल छल । मैथिल मे यैह सर्व-प्रथम "राजा वहादुर" उपाधि पौने छलाह । अपन कनिष्ठ सोदर राजा वहादुर कीर्त्यानन्दसिंह मे हिनक प्रेम वर्णनाऽतीत छल । नीक साहित्य-प्रेमी तथा सङ्गीतज्ञ छलाह । हिनके धर्मपत्नी रानी श्रीमती कलावती देवी छथि, जे श्रीमान् राजा रमानन्दसिंह वहादुर तथा श्रीमान् कृष्णानन्द सिंह वहादुर सन नरपुङ्गव क‌ाजननी छथि ।

पूर्वाऽमन्द-नृपेन्द्र-विद्रुमकराऽसंख्यात-दानोद्भतं
प्रख्याताऽनुपमेय-राज्यगजता-मौलिस्थलप्रस्थितम् ।
"भार" व्याघ्रमसौ निहन्तुममितप्रज्ञः, स्वताताऽऽज्ञया
चाऽऽच्छन्नेव नृपात्मजस्सुरपुरं हा हन्त !! शीघ्रं गतः ॥

(३५)

ई पहिनहुँ वर्णित भै चुकल अछि जे प्राचीन कालहि सँ एहि वंश क लोक अत्यन्त दानी होइत आएल छथि। अतएव एहि राज्य क ऊपर ऋण–भार हैब अस्वाभाविक नहि कहल जा सकैछ। किन्तु कुमार चन्द्रानन्दसिंह अपन पितृदेव राजा बहादुर पद्मानन्दसिंह क आदेशाऽनुसार ओहि ऋण भार कैं जे कि पूर्ववर्त्ती नृपेन्द्र लोकनि क विद्रुम-कल्प हाथैं भेनिहार दान सँ बढ़ल छल तथा हिनक विस्तृत राज्य स्वरूप गजेन्द्र क मस्तक फाड़बाक हेतु प्रस्थान कै चुकबाक कारण बाघ जकाँ भयानक भासित भै रहल छल, समाप्त करबाक हेतु सन्नद्ध भै चुकल छलाह परन्तु हाए !! नहि जानि कुमार एहि अपूर्ण इच्छा कैं नेनहिं किएक एतै सँ ओतैक हेतु प्रस्थान कैलन्हि जतै देवेन्द्र हुनक प्रतीक्षा कै रहल छलाह। कुमार साहेब क शोकप्रद निधन सन् १३२५ साल कुशी अमावास्या मे भेल।

गते कुमुदिनीपतौ कुमुदिनीव शोकाऽऽतुरा
नृपात्मजवियोगिनी निधनकांक्षिणी साऽभवत् ।
प्रजागण-दयावशात् समनुशासनाय स्वयं
मतिं कृतवती कथञ्चिदपि किन्तु चन्द्रावती ॥

(३६)

राजकुमार चन्द्रानन्दसिंह क अकाल-परलोक-प्रयाण सँ सभ लोक अत्यन्त खिन्न भै उठल। वियोगिनी देवी चन्द्रावती तँ चन्द्र-वियोगिनी कुमुदिनी जकाँ अत्यन्त शोक-तप्ता भै प्राणपात पर्य्यन्त क हेतु सन्नद्धा भै उठलीहि। किन्तु प्रजा वर्ग कैं अत्यन्त दीन देखि स्वयं शासन-भार ग्रहण करवाक हेतु विचार बदलै पड़लैन्हि। राजा श्रीपद्मानन्दसिंह यद्यपि जीवित छलाह परन्तु बीच मे रानी पद्मावती क सङ्ग मत भेद उपस्थित भै जैवाक कारण फराके रहैत छलाह। सङ्गहिं राज्यभागो विभक्त भै चुकल छलैन्हि। रानी पद्मावती तँ पुत्र वियोगैं एतेक विह्वलि भै उठलि छलीहि जे धर्माऽऽचरण क अतिरिक्त और कोनो काज नहिं देखै चाहैत छलीहि।

पद्मावती विषम-पुत्रवियोग-वन्हि-
ज्वालाऽवलीढ़हृदयाप्यथ॰यां विलोक्य ।
पुत्राऽनुरूपचरितां निज-पाद-पद्म-
सेवैकजीवनफलां निधनान्निवृत्ता ॥

(३७)

ओना तँ रानी पद्मावती क प्रति देवी चन्द्रावती क आचरण सभ दिन भक्ति विनय ओ सद्भाव सँ पूर्ण छल, विशेषतः कुमार चन्द्रानन्द सिंह क परलोक प्रयाण क अनन्तर ओ आचरण दिन दिन हृदय-ग्राही बनल। जकर फल ई भेल जे एहि आचरण मे पुत्राऽऽचरण क प्रतिविम्ब देखि पुत्र शोक—सन्तप्ता दीनदीना कुमार माता रानी पद्मावती बहुत किछु आश्वासन पौलन्हि। तथा किछु दिन और एहि लोक मे रहि "तारा मन्दिर काशी" सन विशाल परोपकारी संस्था क जन्म देलन्हि।

तस्यामपि प्रियसुताऽऽननदृष्टि-सौख्य-
लोभात्सुरेन्द्र-नगराऽतिथितां गतायाम् ।
याऽति प्रबुद्धहृदयाऽखिल राजकीय-
कार्य्य-व्यवस्थितिकृता-मभजत्प्रतिष्ठाम् ॥

(३८)

किन्तु कुमार-माता रानी पद्मावती प्रिय पुत्र क मुख कमल दर्शन सँ वञ्चिता रहि कतेक दिन एहि लोक मे बितबितथि ? निदान किछु दिन क अनन्तर ओहो एहि लोक सँ बिदा भै गेलीहि, और समस्त राजकीय कार्य्य क भार देवी चन्द्रावती अँहिं क ऊपर आबि पड़ल । परन्तु हिनक विवेचनाशील हृदय तेहन स्थिर छल जे कोनो व्यवस्था मे कनेको गड़बड़ी नहिं पहुँचल । प्रत्युत पूर्ण प्रतिष्ठा लाभ कैलन्हि ।

गुढ़ाऽतिगूढ़ विषयानपि-कोमलेन
हृत्पङ्कजेन सरलानिव मन्यमाना ।
या नो कदाचिदपि कस्यचिदेववाक्या
त्कृत्यं स्वकीय मवधारयति स्म विज्ञा ॥

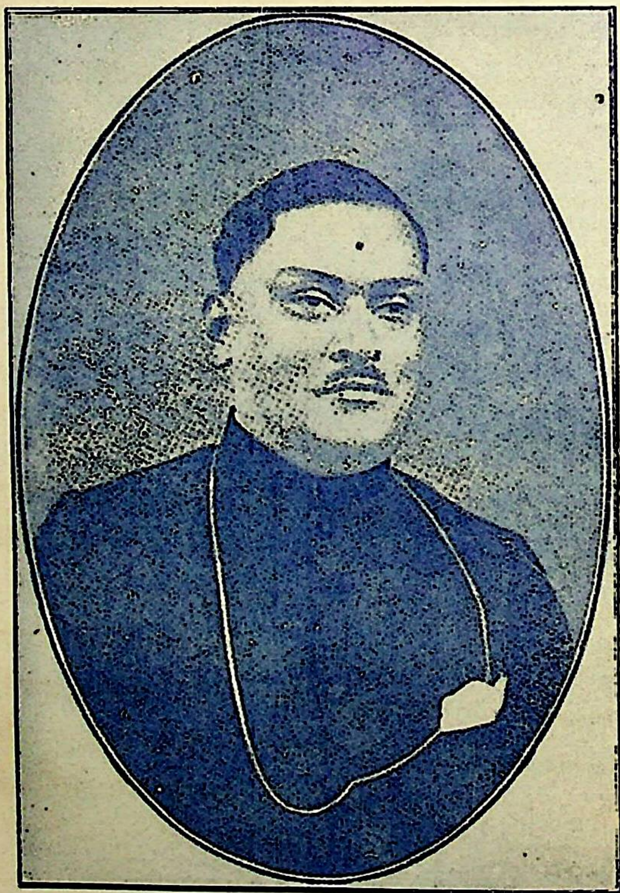
(३६)

स्त्री क ऊपर राज्य-सञ्चालन क भार अएला उत्तर प्रायः ई देखल जाइछ जे ओ व्यक्ति अधिकतर कर्तव्य-पथ क निर्धारण आने व्यक्ति क विचार क सहायतैं करैछ । परन्तु रानी'साहेबा में ई, विशेषता छल जे अनका सँ विचार लैतहुँ कर्तव्य–निर्णय अपन गम्भीर विचारहिं क आधार पर करैत छलीहि । हिनक हृदय कमल करुणा आदि क योगैं अत्यन्त कोमल होइतहुँ एहन गम्भीर ओ प्रौढ़ छल जे कठिनो सँ कठिन विषय कैं सरले जकाँ बुझैत छल ।

यन्मानसस्थितिमती शुशुभे तदानीं
गम्भीरता विसदृशी जननी शुभानाम् ।
अत्यन्त-मन्दर-विलोड़न-सर्पराज-
फूत्कार-भीत-हृदयाऽपसृता महोधेः ॥

(४०)

रानी साहेबा क मानस स्वच्छता ओ पवित्रता आदि क सम्बन्धेँ ओहिना बूझि पड़ैत छल जेना धवल हिमालय क अन्तर्वर्ती मानस सरोवर। अभ्युदय समूह क जन्म देनिहारि यद्भुत विलक्षण गम्भीरता कँ देखि पहने बुझना जाइत छल जे मन्दराऽचल क भयानक आघात तथा सर्पराज वासुकी क विषमय फूत्कार क भयेँ पड़ा कँ प्रशान्त महासागर क गम्भीरता जेना हिनक मानस (अन्तः करण) मे आबि बैसलि हो।



कुमार बहादुर श्रीमान् रमानन्द सिंह ·

आगतवति वैधव्ये
वैधविलेखस्य दुर्निवारत्वात् ।
केवलमगमच्छाटी
नो वैराग्यं मनोऽपि ननु यस्याः ॥

(४१)

देवी चन्द्रावती कर्तव्य बुद्धया राजकीय कार्य्य क सुचारू सञ्चालन करितहुँ ओहि वाह्य विषय मे मोहवती नहिं छलीहि । कारण आकाट्य विधि–विधान क प्रभावैं वैधव्य प्राप्तिक अनन्तर हुनक साड़िए टा राग-रहित नहि भेल छल किन्तु विशुद्ध अन्तः करणो नीक जकाँ राग-रहित भै गेल छल । कहवाक अभिप्राय ई जे समय २ पर नाना शास्त्र पुराण क श्रवण करैत "। सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणा; " एहि निर्णय पर ई नीक जकाँ पहुँचलि छलीहि ।

दीनान्मैथिल-वालकानपि च या शिक्षासुधापायिनः
कर्त्तुं जन्मभव-प्रकर्षलसिते श्रीक्वैलखाख्ये पुरे ।
निःशुल्कं समकल्पयन्नयमयी सौन्दर्य-मन्दाकिनी
प्राङ्लाऽध्यापनमन्दिरं चतुरताशिक्षापगासुन्दरम् ॥

(४२)

ओना तँ रानी साहेबा क हृदय मे सभ दिन सँ परोपकार बुद्धि अङ्कुर रूप मे छले किन्तु ओ आव वढ़ि कँ जनता क समक्ष वहुशाख वृक्ष रुप मे उपस्थित होमै चाहै लागल । निदान हिनक विशुद्ध अन्तःकरण मे ई सदिच्छा उत्पन्न भेल जे अपन जन्म भूमि कोइलख मे तत्काल एक एहन मिडिल इङ्ग्लिश स्कूल खोलल जाए जाहि मे फीस नहि लगवाक कारण गरीबो मैथिल-वालक लोकनि अर्थोपार्जन क प्रधान साधन उच्च अङ्गरेजी शिक्षा क स्वरुपयोग्यता—सम्पादन कै सकथि । स्थिर संकल्प कतहु मिथ्या हो ? लगले एक एहन स्कूल खोलल गेल । जकर सञ्चालनार्थ रानी साहेबा १००००० एक लाख टाका गभर्मेन्ट मे मूलधन क रुप मे जमा कै देल । जकर सूद सँ निर्विघ्न उक्त स्कूल चलि रहल अछि । एकर स्थापना १६२४ ई० मे भेल छल ।

या तीर्थभ्रमणाऽर्थिनी गिरिसुता-पादारविन्दोल्लस-
च्चन्द्रस्पर्द्धि नखांशु मौलिरमला भूलोक-पद्मालया ।
कामाख्याऽतिपवित्र-पीठनिकटे दृष्ट्वा जलस्याल्पतां
देवी दीर्घसरो विनिर्मितवती कल्याणकल्लोलिनी ॥

(४३)

रानी साहेबा क विमल अन्तः करण बीच अन्य धर्माऽचरणानुराग क सङ्ग सङ्ग तीर्थभ्रमणाऽनुरागो कम नहि छल। तदनुसार जखन रानीसाहेबा सर्वोत्कृष्ट शाक्त तीर्थ "कामाख्या" पहुँचलीहि तँ ओहि-ठाम रहनिहार लोक क जल-सम्बन्धी अत्यन्त कष्ट देखि पहाड़हिं पर वहुव्यय-साध्य पोखरि खनबौलन्हि। जाहि सँ तत्रत्य लोक क पहाड़ क नीचा सँ जल लैबा क काठिन्य दूर भेल। रानीसाहेबा क हृदय मे जाहि नीक विषय क संकल्प उठैत छल वहुव्यय साध्य होइतहुँ तकर सम्पादन अवश्य करैत छलीहि। यैह कारण छल जे अत्यन्त कठिन पर्वत-प्रदेशहुँ मे तादृश उत्तम पोखरि क निर्माण करौलन्हि। एवं समय समय पर एकर जीर्णोद्धारार्थो व्यवस्था कैलन्हि। जाहि सँ ई जलाशय सर्वदा क हेतु स्थायी रहि सकै।

रम्यं श्रीवैद्यनाथोज्वलतरनगरेऽनल्पमुद्रा—व्ययेन
प्रौढं प्रासादमेकंसमुचितनिखिलालङ्कृतिभ्राजमानम्।
निर्म्माय प्रीतिकामा दशवदनगुरोस्साम्बशम्भोरनल्प-
श्रद्धाबद्धादरा या कुशतिलसलिलैः, प्रार्पयद्भूसुराय॥

(४४)

रानीसाहेबा क कर कमल देश काल पात्रोचित दान क हेतु सर्वदा सन्नद्ध रहैत छल, जकर विशेष परिचय आगाँ भेटत। श्रीवैद्यनाथ धाम मे बहुव्यय-साध्य अत्यन्त दृढ़ कोठा बनबाए एवं प्रत्येक उपयुक्त उपकरण सँ ओकरा सुसज्जित कै साम्ब भगवान् रावणेश्वर श्रीवैद्यनाथ क प्रीत्यर्थं पूर्ण श्रद्धापुरस्सर दान कै अपन तीर्थ पुरोहित श्रीवदरी द्वारी पण्डा कैं श्रीमती रानी साहेबा देल। ई दान सन् १३४१ साल मे भेल। बनैली राजवंश क लोक पहिनहि सँ रावणेश्वर भगवान् श्रीवैद्यनाथ क भक्त होइत आएल छथि। राजा पद्मानन्द सिंह एक विशाल सिंहद्वार बनबौने छलाह जे एखनहुँ नवीने रूप मे विद्यमान अछि।

[युग्मकम्]

सत्वोद्रेक-सुधासमुद्रहृदय—प्रोद्यद्दयाधिद्रुमा
श्यामाशङ्करकीर्त्तनस्मृति गुणव्याबद्धमुक्तासमा ।
पीयूषाकर-शेखर-प्रियतमे चद्रार्द्धकल्पे पुरे
देवी दीनजनाऽवन-प्रणयिनी भागीरथी-सुन्दरे ॥

(४५)

सा वाण-वेद-गज-भूमि-मिते तु शाक—
सम्बत्सरे ललित—फाल्गुन—शुक्ल-पक्षे ।
एकादशी-शशिदिने कलि-कल्पवल्ली
श्यामा-प्रतिष्ठितिमतीव शुभा मकार्षीत् ॥

(४६)

ओना तँ रानी साहेबा क विशुद्ध हृदय कमल मे भक्ति क मात्रा पहिनहुँ प्रचुरे परिमाण मे छल, विशेषतः आब ओकर मात्रा और अधिक भै गेल। एकर कारण ई भेल जे हिनक विशद अन्तः करण क बीच कर्म योग क स्थान मे आब भक्तियोगो साम्राज्य जमौलक। साधारणतया अधिक लोक विषयानुराग–गुण–गुम्फित रहैछ, किन्तु ई भगवती श्यामा तथा भगवान् शङ्कर क स्मरण कीर्त्तन आदि भक्ति स्वरुप गुण मे ग्रथित मुक्ता क समान विभासिता भै रहलि छलीहि। उद्रिक्त सत्वगुण स्वरुप अमृत सँ भरल हिनक हृदय समुद्र बीच दया रूप प्रवाल-लता लहलहा उठल। हिनक स्नेह दुःखी लोक क रक्षा सँ अकाट्य सम्बन्ध जोड़लक। फेर की छल " शुभस्य शीघ्रम् " एहि उक्तिक अनुसार ई, पवित्र काशी पुरी मे जे की भगवान् विश्वेश्वर क अत्यन्त प्रिय अछि, एवं जे दूर सँ देखने अर्द्ध चन्द्राऽऽकार भासित होइछ। तथा भगवती भागीरथी क कुटिल धारा जकर कण्ठ-लग्न-मुक्ता-माला जकाँ बूझि पड़ैछ, विशिष्ट मन्दिर क निर्माण कराए शाके १८४५ फाल्गुन शुक्ल सोम कँ वैदिक विधान क अनुसार प्रशस्त वैदिक आचार्य्य क द्वारा भगवती श्रीश्यामा क प्रतिष्ठा कै अमित पुण्य क भागिनी वनलीहि। भगवती श्यामा क नाम "चन्द्रावती श्यामा" राखल गेल। एहि प्रतिष्ठा क अवसर पर रानी साहेबा वड़ प्रतिष्ठा प्राप्त कैल। शताऽधिक मैथिल पण्डित एवं सहस्राऽधिक कुटुम्ब वर्ग एहि अवसर पर उपस्थित भेल छलाह। लाखावधि टाका एहि महोत्सव क अवसर पर उपयोग मे आएल। आवाल वृद्ध उपस्थित मैथिल तथा अनेक शत मैथिलाऽतिरिक्त विद्वान कैं सभा दक्षिणा रूप मे तेरह तेरह टाका दै सत्कार कैल गेल।

गिरीन्द्र तनया-मुखोत्पलमिलन्मिलिन्दोपम-
त्रिनेत्र-विलसन्मुखं शशिविभासि चन्द्रेश्वरम् ।
गजाननन-विराजिते रचितनन्दि-सन्मन्दिरे
पतिस्मृति-चिरस्थिति-प्रसृतवासनाऽस्थापयत् ॥

(४७)

उक्त श्यामा प्रतिष्ठहिं क अवसर पर अपर रम्य मन्दिर क बीच भूतभावन भगवान शङ्करहुँ क लिङ्ग रूप मे प्रतिष्ठा कैल गेल। ई प्रतिष्ठा परलोक गत कुमार चन्द्रानन्द सिंह क चिरस्मारक रूपमे भेल। अतएव एहि प्रतिष्ठित लिङ्ग क नाम चन्द्रेश्वर राखल गेल। मन्दिर क एक भाग मे श्रीगणेश मूर्त्ति क तथा एक भाग मे श्रीपार्वती मूर्त्तिहुँक प्रतिष्ठा भेल । प्रतिष्ठित दिव्य लिङ्ग चन्द्र-चिह्न सँ सुशोभित अछि, एवं ओहि त्रिनेत्र चिह्नहुँ सँ विभूषित अछि जे भगवती भवानी क मुख-कमल मे साकांक्ष भ्रमर क समान बूझि पड़ैछ।

देव–प्रतिष्ठिति–भव–प्रमदेन युक्ता
सिक्ताऽभिषेक–सलिलैरपि वेदविज्ञैः।
प्राणेश–निश्चित–भयानक–भारनाश–
कामा न शान्तिमगमत् क्षणमप्यतन्द्रा॥

(४८)

यद्यपि उक्त रमणीय देव प्रतिष्ठा सँ प्राप्त अमन्द आनन्द क प्रवाह, रानी साहेबा क विमल अन्तः करण बीच अविश्रान्त भावेँ वहि रहल छल, वेद-विशेषज्ञ लोकनि क अभिषेक-जल सँ सिक्त शरीर शीतलता केँ प्राप्त कै रहल छल। तथापि अपन प्राणेश्वर-परलोक गत कुमार चन्द्रानन्द सिंह सँ प्रतिज्ञात भीषण ऋणभार क अपाकरण सम्बन्धी जाज्वल्यमान कामना वश पूर्ण शान्ति नहि पावि रहल छलीहि।



कुमार बहादुर श्रीमान् कृष्णानन्द सिंह

यद्भार-शार्दूलवधोद्यतोऽस्तं
गतः कुमारः सशरीर-मारः ।
द्रुतं तदुच्छेद-विधान-दत्त-
विचारकक्षाऽन्तरिता वभूव ॥

(४६)

शरीर धारण कै आएल अनङ्ग क समान लावण्य शाली कुमार चन्द्रानन्द सिंह जाहि ऋणभार स्वरुप बाघ कँ मारवाक हेतु उद्यत होइतहिं परलोक क पथिक भै चुकल छलाह, रानी साहेवा शीघ्र ओकर उच्छेदोपाय सम्बन्धी विचार स्वरुप प्राकार क अन्तर्वर्त्तिनी भेलीहि। अर्थात् ओहि उपाय क मनन मे अत्यन्त मग्न भै गेलीहि जाहि सँ वर्णित ऋणभार क समूल नाश हो ।

चन्द्रावती विशदनीतिपरैरुपायै-
र्भारेण मुक्तमकरोदमरं स्वराज्यम् ।
निष्कण्टकं करदमानस-हंसमञ्जु-
मुक्ता फलायितमखिन्नमतिर्नवश्रीः ॥

(५०)

अपर लक्ष्मी क समान शोभा सम्पन्ना बुद्धिमती रानी साहेबा अपन मनन क फल स्वरुप एक शुभ्र नीति-पूर्ण उपाय निकाललन्हि जाहि बलैं हिनक राज्य निष्कण्टक भेल। रानीसाहेबा क विशुद्ध हृदय मे ई विचार उत्पन्न भेलैन्हि जे यदि एहि ऋण कैं सधैबाक हेतु राज्य क किछु अंश आन क हाथ वेचि देल जाएत तँ ओ अंश सर्वदा क हेतु बनैली राज्य क हाथ सँ चल जाएत। एहि विचार क अनुसार रानी साहेबा ताही लोक क हाथ राज्य क किछु अंश दै ऋण सधौलन्हि जे एही कुल क छलाह, तथा रानी साहेबा क वाद उत्तराधिकारिओ हैवाक अधिकार रखैत छलाह। रानी साहेबा क सम्पत्ति अपनहिं वा राज कर्मचारिअहिं क उपभोग क हेतु नहि छल। किन्तु प्रजावर्ग स्वरुप मानस हंसहुँ क हेतु ओ मोती क समान भासित भै रहल छल।

टिप्प०—मानस हंस मोती खाइछ ई वात लोकप्रसिद्ध तथा काव्य प्रसिद्ध अछि।

सद्दर्शनेषु-गज-भूमि-मिते तु शाक-
सम्बत्सरे शुचिसिते विधिशालिशुक्रे ।
सीताऽनुजाऽञ्जनिज-शोभित-रामचन्द्र-
मूर्त्ति-प्रतिष्ठिति मनन्यसमा व्यतानीत् ॥

(५१)

चन्द्रावतीश्यामा तथा चन्द्रेश्वर क प्रतिष्ठा कैने रहितहुँ "श्रेयसि केन तृप्यते" एकर अनुसार रानी साहेबा क विमल अन्तः करण देव प्रतिष्ठा सँ सन्तोष नहि प्राप्त कैने छल। आव उक्त ऋणभार हटि गेला उत्तर हिनक हृदय पूर्ण प्रफुल्लित भै उठल। अतएव श्यामा मन्दिर क निकटहिं स्वच्छ सङ्गमरमर क दू मन्दिर क निर्माण कराए शाके १८५६ आषाढ़ शुक्ल द्वितीया शुक्र कँ श्रीसीता श्रीलक्ष्मण ओ श्री हनुमान सहित श्रीराम मूर्त्ति क प्रतिष्ठा कैलन्हि, ई हो स्थापना वेस धूम धाम सँ सम्पन्न भेल। एहू अवसर पर सभ कार्य्य पूर्व-सम्पन्न श्री श्यामा स्थापना क अनुसार यशस्कर भेल। दक्षिणासभा क रूप मे आबाल वृद्ध मैथिल तथा मैथिलाऽतिरिक्त अनेक शत विद्वान् कँ एगारह एगारह टाका दै सत्कार कैल गेल, कुटुम्ब वर्ग पूर्ववत् सम्मानित कैल गेलाह।

स्वकरपालित–सोदरकन्यका
गतवती सहसा दिवि मालती ।
सतत–तत्स्मृति–रक्षण-हेतवे
भगवतीं कमलां समवेशयत् ॥

(५२)

रानी साहेबा क सहोदर भाए गीतादत्त झा क प्रथम धर्मपत्नी सँ उत्पन्ना मालती क ऊपर रानी साहेबा क दृष्टि अत्यन्त स्नेह पूर्ण छल । मालती वस्तुतः छलीहो मालतीए । विवाह आदि क अनन्तर ओ एहि लोक क मालती नहि रहि स्वर्ग क मालती बनि गेलीहि । रानी साहेबा क स्नेह पूर्ण स्मृति-पटपर यद्यपि ओ सदैव अङ्कित रहैत छलीहि, तथापि अनन्त कालक हेतु एहि लोक पर हुनक स्मारक राखि जैबाक हेतु श्यमा मन्दिरहिं क समीप संङ्गमरमर पाथर क स्वच्छ मन्दिर बनवाए हुनक नाम पर रानी साहेबा भगवती महालक्ष्मी क प्रतिष्ठा कैलन्हि । मूर्त्तिक नाम "मालती महालक्ष्मी" राखल गेल ।

टिप्प०—हिनक विवाह सिंह वाड़ क प्रसिद्ध जमीन्दार श्रीजगदीश ठाकुर सँ छल । जे एखन श्यामा मन्दिर क अन्यतम ट्रष्टी छथि ।

(युग्मकम्)

याऽऽसीद्धारविमानसेऽनुदिवसंस्नात्वाविशुद्धाऽऽकृति
र्यस्याः श्रीभवभूति-भूतिभिरभून्नो जातु चिन्ता हृदि।
या भासाऽऽदि-कवेः कराम्बुजदलैः संपूजिताऽनुक्षणं
श्रीहर्षं समवाप्य हर्षमभजत्, वीणां वहन्ती करे॥

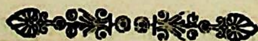
(५३)

तां पद्मासन–सुन्दरीं भगवतीं गीर्वाणवाणीमिमां
दर्शं दर्शमतीव दुःस्थितिशत-प्राप्तव्यथाव्याकुलाम्।
तच्छुश्रूषणदक्ष–शिक्षण–लसद्विद्यार्थिवृन्दाऽवन–
व्यग्राऽध्यापन–मन्दिरं कृतवती चन्द्रावती श्रीमती॥

(५४)

रानी साहेबा दान करबाक समय उपयुक्त कार्य्य क ऊपर पूर्ण ध्यान रखैत छलीहि। हुनक शुभदृष्टि जीर्ण शीर्ण संस्कृत विद्या क दिस आबि पड़ल। जे भगवती देव वाणी एकदिन महाकवि भारवि सन सन विशिष्ट विद्वान क सरस एवं विमल मानस बीच डुब्बी

लगाए विशुद्ध देहा रहैत छलीहि । जनिक अन्तः करण बीच महा कवि भवभूति क सन सन भावुक भक्त क अतुल विभूति क वलेँ चिन्ता क रेखो नहि पाओल जाइत छल । जनिक चरण पङ्कज महा कवि भास, कविकुल-गुरु कालिदास आदि अलौकिक पुरुष क कर कमल दल सँ प्रतिपल पूजित होइत छल । जे महाकवि श्रीहर्ष सन सन सुपुत्र पावि एतेक हृष्ट रहैत छलीहि जे हाथ सँ बीणा कखनहुँ नहि उतारैत छलीहि, तनिक निःसीम दयनीय दशा देखि दयाशीला रानी साहेबा क कोमल हृदय पघिलि गेल । शीघ्र ओहि अमरगवी क सुश्रूषार्थं शताऽधिक छात्र कैं भोजन क चिन्ता सँ रहित कै नियुक्त कैल । एवं एही पुण्यमय काशी मे एक एहन उच्चकोटि क संस्कृत विद्यालय क उद्घाटन कैलन्हि जे देववाणी क सुश्रूषा सुचारु रूपैं संपादित भै सकै । विद्यालय क नाम " श्रीचन्द्रावतीश्यामा विद्यालय " राखल गेल । छात्र क भोजन-प्रबन्धो उच्चकोटि क कैल गेल । मैथिलाऽतिरिक्त छात्र क हेतु सीधा देवा क व्यवस्था राखल गेल । जाहि सँ मैथिलातिरिक्तो छात्र सुर-सरस्वती क उपासना करथि ।



गजमित मिह लक्षं सार्द्ध मुद्धार-कामा
भवजलधि-तरङ्गा द्दुःखहालाहलाङ्गात् ।
स्वपति-पितृ-कुलस्य प्रोद्गताऽमन्दकीर्त्ति-
र्नियत-वितत-कृत्यै प्रार्पयद्धर्ममूर्त्तिः ॥

(५५)

धवल-कीर्त्ति भूषिता रानी साहेबा पतिकुल ओ पितृकुल दूहू क दुःख स्वरुप हलाहल मिश्रित संसार-सागर क प्रवल तरङ्ग सँ पार करबा क हेतु श्यामा मन्दिर संस्था क अन्तर्गत निश्चित समस्त कार्य्य क नियमित सम्पादनार्थ एकमुष्टि साढ़ेआठ लाख टाका क दान कैल। एवं ई प्रतिज्ञा कैल जे आइ दिन सँ मरण पर्य्यन्त जे किछु और द्रव्य एकत्र भै सकत से हम एही संस्था मे लगाएव।

टिप्प०—उक्त प्रतिज्ञा क अनुसार औरो दान दै एकर स्थायी कोष कैं समुन्नत कैलन्हि, जकर उल्लेख आगाँ हैत।

नृपकुलमुपायता पूर्व-पुण्यैरगण्यै-
रविरल-धनदानाम्भोधि-सम्पूर्णदेशा ।
शशिविशदयशोभिर्व्याप्तदिङ्मण्डला सा
मिथिपुर-वरराज्ञी शस्तकृत्या वभूव ॥

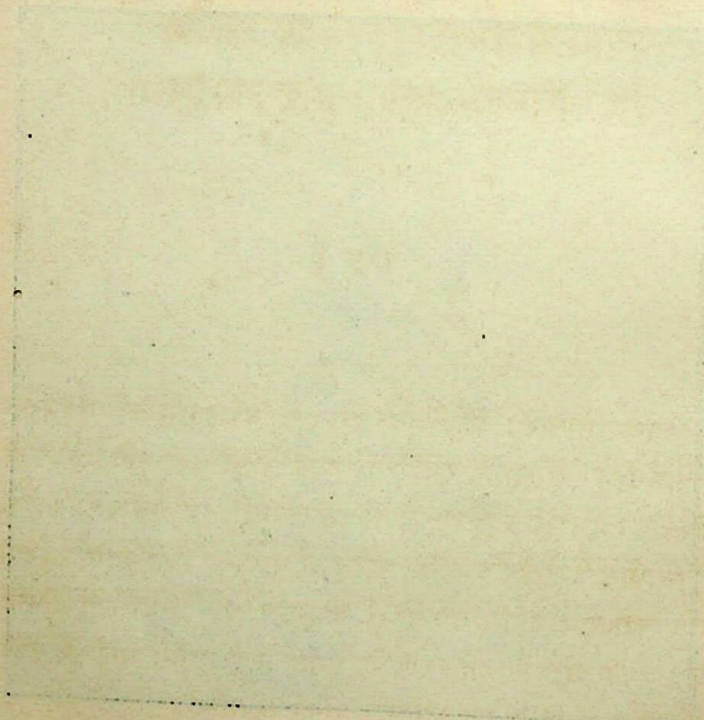
(५६)

रानी साहेबा अपन धवल गुणगण तथा चिरस्थायी धार्मिक कृत्य सँ पूर्ण विख्याति प्राप्त कैल। जे अपन पूर्व जन्मोपार्जित अमित पुण्य क प्रतापैं वनैली राजमहल क असूर्य्यम्पश्या हैबा क सौभाग्य प्राप्त कैने छलीहि। जनिक अविश्रान्त दानजलधारा देश कैं प्रक्षालित कै रहल छल। जनिक शशि-शुभ्र यशोराशि सँ दिङ्‌ मण्डल व्याप्त भै रहल छल ताहि मैथिल—राज महिषी क धार्मिक कृत्य क सभ लोक प्रशंसा कैलक ई कोन आश्चर्य्य क विषय ?



बाबू श्री हरिनन्दन ठाकुर





चन्द्रावती निजयशस्सुमनो विकाश-
संसर्पि सौरभ-सुगन्धित-भूमिभागा ।
श्यामानुरक्तशशिचूड़-पदारविन्द
सेवाऽतिरक्त-हृदयाऽनुपलं वभूव ॥

(५७)

अपन यशस्वरुप प्रफुल्लित कुसुम सँ निकलैत सुगन्धैँ भूमण्डल कैँ आमोदित कैनिहारि रानी साहेवा क भक्ति-भाव-भूषित हृदय मे अधिक काल काशी रहवाक इच्छा उठैँ लागल । तथा भगवती श्यामा ओ भगवान चन्द्रेश्वर क चरण कमल सँ सम्बन्ध रखनिहार अनुराग उमड़ि आएल । रानी साहेवा क उपासना पूर्ण स्मार्त्ताऽनुयायिनी छल । जकर प्रत्यक्ष उदाहरण यैह अछि जे ई श्यामा चन्द्रेश्वर तथा श्रीरामचन्द्र आदि अनेक देवता क प्रतिष्ठा कैलन्हि ।

श्रोत्रे यदीये न कदाप्य गच्छतां
परापवादश्रवणात् प्रसन्नताम् ।
श्यामेश-नाम-श्रुतिज—प्रमोद—
मुपाऽऽदधाने विगतोपमाने ॥

(५८)

अधिक लोक क विशेषतः स्त्री गण क कान आन क निन्दा सुनबाक हेतु बड़ लालायित रहैछ । जौं सुनलक ँ पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त करैछ । परन्तु रानी साहेबा क कान एहि तरह क नहि छल । कखनहुँ आन क निन्दा श्रवण सँ प्रसन्न नहि होइत छल । केवल भगवती श्यामा ओ भगवान् शङ्कर क नाम श्रवण सँ प्रसन्नता क लाभ करैत छल ।

आस्वादयन्त्यपि फलानि मनोहराणि
द्राक्षादिकानि सुरभीणि न॰ यद्रसज्ञा ।
प्रापाऽमितामकथनीय-मुदं कदाचि-
देवं यथा शिव शिवे त्यसकृद्वदन्ती ॥

(५६)

हिनक जिह्वो साधारण मनुष्य क जिह्वा क अपेक्षा बहुत किछु विलक्षणता रखैत छल। पर-निन्दा क तँ कथे की जे अत्यन्त मिष्ट ओ सुगन्धि नाना फल रस क आस्वादनहु सँ ओहन प्रसन्नता नहि प्राप्त करैत छल। जेहन "शिव शिव" एहि तरह क भगवन्नामोऽच्चारण सँ। अभिप्राय ई जे शिव भजन मे रानी साहेबा कैं खूब मन लगैत छलैन्हि। ई पहिनहुँ वर्णित भै चुकल अछि जे हिनका महेश-वाणी गैवाक अनुराग बाल्यावस्थहिं सँ छलैन्हि। अधिक काल मैथिल रमणी लोकनि क सङ्ग बैसि महेश-वाणी क गान करैत छलीहि। एकर उल्लेख पहिनहुँ भै-आएल अछि ।

यल्लोचने कमल—सुन्दरताऽभिमान-
सम्मोचने गणयतः स्म परं स्वकार्य्यम् ।
व्यालाऽवलीललित चन्द्रकलाऽवतंस-
गौरी—विभासि-वरविग्रह—दृष्टिमेव ॥

(६०)

अधिक लोक क आँखि, अपन यैह प्रयोजन बुझैछ जे सुन्दर सुन्दर सांसारिक दृश्य क अवलोकन करी । किन्तु देवी चन्द्रावती क सुन्दर लोचन द्वय उक्त प्रयोजन कैं बड़ गौण बुझैत छल । मुख्य प्रयोजन ओकरा हेतु भुजङ्ग माला सँ अलङ्कृत, चन्द्रमा क कला सँ सुशोभित जगदम्बा पार्वती सँ सम्बद्ध—विशिष्ट मूर्त्ति क दर्शने । अभिप्राय ई जे रानी साहेबा, भगवान् शङ्कर क दर्शन सँ बड़ आनन्द पबैत छलीहि ।

यद्भव्य-दक्षिण-करे विमलाऽक्षमाला-
मङ्गुष्ठ-राग-विकचीकृत नैक-वीजाम् ।
सम्वीक्ष्य लुब्ध-हृदयः शुशुभेऽल्पवीजा-
मप्यादरेण धृतवानिव वाम-पाणिः ॥

(६१)

रानी साहेबा क जप करवा मे खूब मन लगैत छलैन्हि । जपो ओना हड़हड़ौआ नहि करैत छलीहि जे हाथ मे माला चलि रहल अछि और आँखि झपकी लै रहल अछि । अथवा मुखभङ्गी अन्य-मनस्कता क सूचन कै रहल अछि । अभिप्राय ई जे बड़े सावधानता सँ मन्त्र क ध्यान करैत, समस्त अङ्ग क सञ्चालन कैं रोकि शास्त्र नियम क अनुसार जप करैत छलीहि । हिनक दहिना हाथ मे जपमाला ओ वामा हाथ मे छोट संख्या माला देखि ओहिना बूझि पड़ैत छल जेना हिनक वाम हाथ हिनक दहिना हाथ मे स्वच्छ जप माला कैं जकर अनेक दाना लाल अङ्गुठा क सम्पर्कैं मूङा क दाना जकाँ भासित भै रहल छल देखि, लोभ सम्बरण नहि कै छोटो माला कैं आदर पूर्वक रखने हो ।

यस्याः पदाम्बुज-युगं शुभसद्म-तीर्थ
भूमिस्पृहात्मकनखाऽऽवलि-भासमानम् ।
काश्यां कदाचिदथ विन्ध्य-गिरौ चकाशे
श्रीवैद्यनाथ—नगरे जगदीश्वरे च ॥

(६२)

रानी साहेबा कैं आन धर्माऽऽचरण क समान, तीर्थ पर्य्यटनो मे खूब रूचि छल। अतएव कौखन काशी कौखन विन्ध्याचल, कौखन वैद्यनाथ कौखन जगन्नाथ आदि पुण्य क्षेत्र क यात्रा करितहिं रहैत छलीहि। हिनक उज्वल चरण-नख पंक्ति कैं देखि वहूत लोक क हृदय मे यैह कल्पना उठैत छल जे ई नख पंक्ति नहि थीक किन्तु पुण्य मय तीर्थ भूमि क सम्बन्ध मे भेनिहारि-हिनक चरण कमल क स्पृहा। अभिप्राय ई जे अनेक तीर्थ भ्रमण करितहुँ हिनक चरण कमल, तीर्थ गमनार्थ सर्वदा सस्पृह रहैत छल।

निष्कामभक्तिजलजालविराजमानं
श्रद्धामरालवनिता–प्रतिभासनम् ।
यन्मानसं प्रतिपलं हसति स्म बोध-
कञ्जं जड़त्व जननं हिम-मानसं तु ॥

(६३)

प्रायः धनी लोक क नीति वेसी पवित्र नहि रहैछ। अन्तः करण किछु ने किछु प्रपञ्च क पंजामे फँसिए जाइछ। परन्तु रानी साहेबा क अन्तः करण तेहन नहि छल। ई तेहने विशुद्ध छल जे मानस सरोवरहुँ कैं जेना अपन गुण-गण सँ हँसैत हो। कारण मानस सरोवर जौं शुभ्र अमित जल राशि सँ भरल छथि तँ ई निष्काम भक्ति स्वरूप अमित जल सँ परिपूर्ण छल, ओतै तीर पर यदि साधारण हंसी टहलैछ तँ एतै "श्रद्धा" हंसी विचरण कै रहलि छलि। ओतै जँ साधारण कमल फुलाइ छ। तँ एतै "प्रबोध" स्वरुप कमल प्रफुल्लित छल। वाहू पर सँ एहि मे विशेषता ई छल जे ओ हिमालय क मानस जड़ता दैछ, अर्थात् जल संयोगैं हाथपैर कै ठिठुरा दैछ, किन्तु हिनक अन्तः करण एहि दोष सँ एकदम रहित छल।

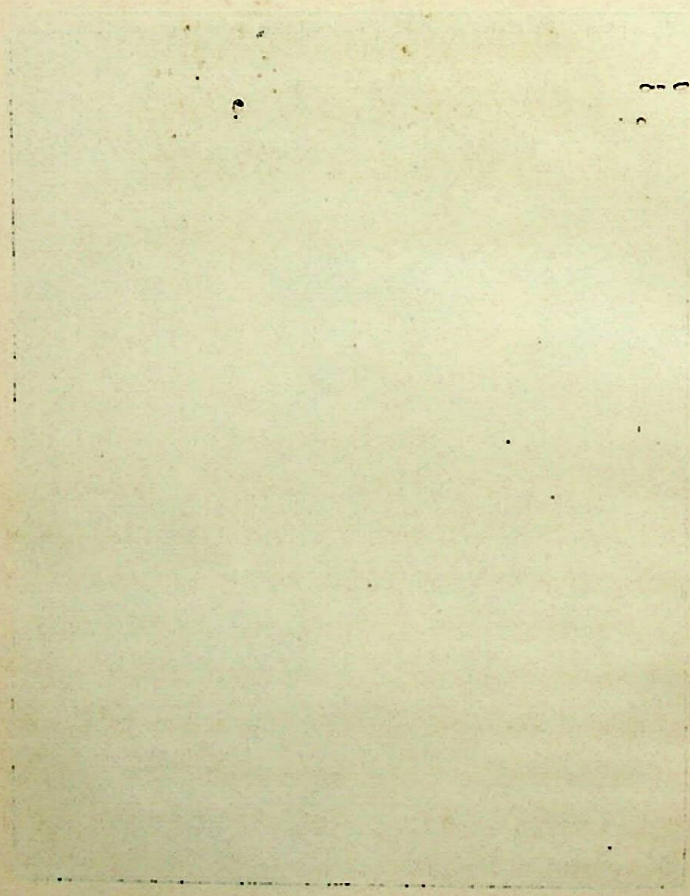
श्रीवैद्यनाथोपरि वेदविद्भिः
श्रीमद्धरिद्वार-समाहृतेन ।
गाङ्गेन तोयेन महाऽभिषेकं
या प्रत्यहं कारयति स्म विप्रैः ॥

(६४)

ई पहिनहुँ वर्णित भैचुकल अछि जे श्रीवैद्यनाथजी मे रानी साहेबा क भक्ति अपरिमित छल। तदनुसार हरिद्वार ब्रह्मकुण्ड सँ विशुद्ध गङ्गा-जल मङवाए ओहि सँ प्रतिदिन रावणेश्वर भगवान श्रीवैद्यनाथ-लिङ्ग पर ओहन विशुद्ध अनुष्ठाता ब्राह्मण क द्वारा महाऽभिषेक क करवैत छलीहि जे वेदमन्त्रक नीक अभ्यास तथा अर्थज्ञान रखैत छलाह। अभिप्राय ई जे रानी साहेब कैं अनुष्ठान मे बड़ प्रेम छलैन्हि। सङ्गहिं ओकर उपादान ओ कैनिहार क विशुद्धता दिस पूर्ण ध्यान रखैत छलीहि।



बाबू श्री काशीनाथ झा



या योनिपीठे जगदम्बिकायाः
श्रीकामरूपेऽमितसिद्धि-भूमौ ।
वितीर्णपारिश्रमिकाऽऽगमज्ञान्
विप्राननुष्ठानपरानकार्षीत् ॥

(६५)

ई पहिनहिं वर्णित भै चुकल अछि जे रानी साहेबा श्रीकामाख्या गेलि छलीहि और ओहि ठाम उत्कृष्ट जलाशय क निर्म्माण करौने छलीहि । ओतै भगवती कामाख्या क दर्शन सँ हिनक अनुष्ठान-प्रिय हृदय एतेक प्रभावित भेल जे उत्कृष्ट तन्त्रज्ञ ब्राह्मण कैं मासिक वेतन दै अनुष्ठान सुरूह करवाओल, जे आजीवन होइत रहल । तन्त्रज्ञहुँ क आदर ई एहि हेतु करैत छलीहि जे तन्त्र कैं साक्षात् भगवान् सदाशिव क मुख कमल सँ निर्गत बुझैत छलीहि । शास्त्र क ऊपर हिनका एतेक विश्वास छलैन्हि जे कोनो शास्त्र-प्रतिपादित बिषय मे ननु नच करब पाप बुझैत छलीहि ।

टिप्प०—कामाख्या क पोखरि, जकर उल्लेख पहिनहुँ भै आएल अछि सन् १३२८ साल मे कोड़ाओल गेल छल । और ओकर यज्ञ सन् १३२९ साल मे भेल छल ।

काशीस्थमृत्युञ्जयलिङ्गमूर्ध्नि
भागीरथी निर्मल वारिणाऽपि ।
अनुश्रवाऽभ्यास-रतेन नित्यं
याऽकारयद्रौद्र महाऽभिषेकम् ॥

(६६)

श्रीकाशियहुँ मे प्रशस्त "मृत्युञ्जय" लिङ्ग क ऊपर विमल गङ्गाजल सँ वैदिक ब्राह्मण क द्वारा नियमित रूपेँ बराबरि षड्ङ्गशत रुद्रीय मन्त्रैँ अभिषेक करवैत छलीहि। श्रीविश्वेश्वर लिङ्गहुँ क ऊपर नियमित रुपैँ हिनका दिस सँ गङ्गाजल चढ़ैवा क व्यवस्था कैल छल। एतदतिरिक्त श्रीविन्ध्याचलहुँ मे बराबरि अनुष्ठान चलैत छल। प्रत्येक वर्ष आश्विन तथा चैत्र दूहू नवरात्र मे भगवती श्रीविन्ध्यवासिनी क ओहि विशाल पूजा क आयोजन हिनका दिस सँ होइत छल, जे हिनक शासु रानी पद्मावतीअहिं क अध्यक्ष सँ होइत अबैत छल। शारदीय नवरात्र मे अपन रामनगर डेउढ़िअहुँ मे बड़ धूम-धाम सँ भगवती दुर्गा क पूजा करबैत छलीहि।

विहारदेशे विरलैव संस्थाऽऽ-
सीत्तादृशी याचकतामुपेता ।
यत्सन्निधौ नो वहति स्म वेगा-
द्यदीय-दानाम्बु नदी प्रशस्ता ॥

(६७)

रानी साहेबा अधिकतर प्रायः पश्चात् भागलपुरहिं रहैत छलीहि । हिनक डेउढ़ी प्रायः एको दिन याचक सँ शून्य नहि रहैत छल । जकर कारण ई छल जे क्यौ निराश भै एहिठाम सँ नहि जाइत छल । ओना तँ वैयक्तिको याचना कैं एहिठाम निःफलता क मूह नहिए देखै पड़ैत छलैक तथापि संस्था क याचना पर वेसी ध्यान देल जाइत छल । विहार क प्रायः विरले एहन संस्था छल हैत, जकर याचना क अनन्तर ओकरा लगदै हिनक दान जल क नदी नहि बहल हो ।

नीतिज्ञा रानी साहेबा "उपार्जितानां वित्तानां त्याग एवहि रक्षणम्" एहि नीति क मनन खूब नीक जकाँ कैने छलीहि । जकर फल ई छल जे अपन आवश्यक व्यय सँ बचल अर्थ क विनियोग उपयुक्त कार्य्य क हेतु कैने विना चैन नहि लैत छलीहि ।

शृण्वन् समुद्रस्य परेऽपि पारे
गुणाऽऽवलीमप्रतिमां यदीयाम् ।
यां भारतेशो मुदिताऽन्तराऽऽत्मा-
ऽकार्षीदुपाधि–प्रतिभासमानाम् ।।

(६८)

कस्तूरी क गन्ध कतहु छपल रहौ ? हिनक अनन्त गुण गौरव, समुद्र पारवर्त्ती भारतेश्वर सम्राट् पञ्चम ज्योर्ज क कान धरि पहुँचल । जकर शुभ परिणाम ई भेल जे–उक्त सम्राट् हिनका "रानी" उपाधि दै पूर्ण सम्मानित कैल। जकर सूचना सम्राट् क प्रतिनिधि भै भागलपुर क कमिश्नर साहेब रानी साहेबा क डेउढ़ी पर आवि पर्दा क बाहर सँ रानी साहेबा कैं देलन्हि। यद्यपि ई तथ्य थीक जे ई पहिनहुँ रानी छलीहे। तहिं तँ सम्राटो हिनका रानी करार देल। तथाऽपि ई की कम प्रशंसनीय कहल जा सकैछ जे हिनक धवल यशोरासि दुस्तर समुद्र क पार कै सम्राट् पर्य्यन्त कैं अपना दिस सकांद्द कैने विना नहि छोड़लक ।

अमूर्त्त-कीर्त्ते रूदयेन हृष्टा–
यथाऽभवत्कल्पलतोपमाऽऽकृतिः ।
सुमूर्त्त-कीर्त्ते रूदयेन हृष्टा–
तथाऽभवद्याऽनुपलं रमाकृतिः ॥

(७६)

रानी साहेबा अपन धवल कीर्त्ति क पूर्ण उदय सँ बड़ प्रसन्न भै रहलि छलीहि। जकर कारण ई छल जे "चिन्ता यशसि न वपुषि" एहि महापुरुषोक्ति क उपर खूब मनन कैने छलीहि। सङ्गहि विशेषता ई छल जे ई अपन अमूर्त्ते कीर्त्ति क उदय सँ हृष्टा नहि होइत छलीहि किन्तु सङ्गहि मूर्तिमान "कीर्ति" अर्थात् राजा वहादुर श्रीकीर्त्त्या-नन्द सिंहहुँ क उदय सँ पूर्ण हृष्टा होइत छलीहि। उक्त राजा वहादुर, सम्वन्ध मे हिनक श्वसुर छथीन्हि। ई मिथिलादेश क विशिष्ट राज-नैतिक तथा धार्मिक श्रीमान् छथि। ई स्वर्गीय कलि कर्ण राजा लीला-नन्दसिंह क तृतीय धर्म पत्नी क द्वितीय पुत्र थिकाह।

टिप्पणी—राजा बहादुर कीर्त्त्यानन्दसिंह क जन्म १८८३ ई० मे भेल छल। म्योर सेन्ट्रल कालेज मे उच्च शिक्षा प्राप्त कै बी० ए० उपाधि प्राप्त कैलन्हि। ई हिन्दी तथा अंग्रेजी क सिद्ध हस्त लेखक छलाह अछि। हिनक चरित्रवल अनुकरणीय छल। शिकारी एहन उत्तम छलाह अछि जे करीब १०० बाघ मारने छलाह। एवं "शिकार" नाम क एक पुस्तक बनौने छथि।° फुटवाल तथा पोलो क प्रसिद्ध खेलाड़ी छलाह। मैथिल क दुर्दैव वश परूकाँ सन् १६-३८ ई० क माघ मे शिव सायुज्य प्राप्त कैलन्हि।

रमा–सहायाऽगणयन्न कृत्यं
स्वजीवने या कठिनं कदाचित् ।
"रमा"-सहायाऽगणयन्न कृत्यं
स्वजीवने या कठिनं कदाचित् ॥

(७०)

रानी साहेबा अपन अपरिमित लक्ष्मी क ऊपर सहायता क विश्वास रखैत अपन जीवन कालीन कोनो अर्थ–साध्य कार्य्य कैं कठिन नहि बुझैत छलीहि। एवं कुमार वहादुर श्रीमान् रमानन्दसिंह सँ प्राप्त भेनिहारि सहायता क ऊपर विश्वास रखैत अपन परोक्षहुँ क कोनो कार्य्य कैं कठिन नहि बोध करैत छलीहि। कुमार बहादुर श्रीमान् रमानन्दसिंह मे रानी साहेबा क स्थिर विश्वास छल। एकर कारण ई छल जे हिनका मे लोक कैं चिन्हबाक शक्ति अपूर्व छल। ओ जनैत छलीहि जे श्यामा मन्दिर सन विशिष्ट संस्था क सञ्चालन-भार यदि एहन कर्त्तव्य परायण, विवेचक उत्साही युवक क ऊपर नहि देल जाएत तँ उक्त संस्था सुचारू रूपैं नहि चलि सकत। विशेषतः जखन कि ओकर प्रारम्भावस्था रहत। यैह कारण छल जे पतिकुल क अन्य विशिष्ट व्यक्ति क अछैतहुँ श्यामा मन्दिर संस्था क मुख्य सञ्चालन भार कुमार बहादुर श्रीमान् रमानन्दसिंहहिं क दृढ़ हाथ मे सोंपि गेलीहि। कुमार बहादुर विशिष्ट राज गुण सँ विभूषित परम प्रगल्भा-

ऽऽकृति उत्कृष्ट प्रभावशाली, राज्य सञ्चालन-पटु, प्रसिद्ध शिकारी विद्या प्रेमी, होमियो पैथिक चिकित्सा क नीक ज्ञाता, पुस्तक प्रणयन ओ प्रकाशन क प्रणयी छथि। ई स्वर्गीय राजाबहादुर कलानन्दसिंह क ज्येष्ठ पुत्र थिकाह। हिनक निवास स्थान उएह गढ़ बनैली अछि जे पुरातन काल सँ हिनक वंशधर राजा लोकनि क राजधानी रूप मे आबि रहलि अछि। हिनक शुभ जन्मकाल १९०१ ईशवी अछि। ई गढ़ बनैलि अहि मे कलानन्द हाइस्कूल क स्थापना कैने छथि। जाहि सँ बहुसंख्य प्रान्तीय-बालक गण शिक्षा प्राप्त कै रहल छथि।



टिप्पणी—कुमार बहादुर क ग्रन्थ-निर्माण सामर्थ्य एहि सँ ज्ञात होइछ ने "ध्वजा रोपण" नाम क हिन्दी नाटक क निर्माण कैने छथि। गत निर्वाचन मे ई लेजिस्लेटिव काउन्सिल क मेम्बर निर्वाचित भेल छथि।

कृष्णोदयेनाऽति मुदं दधानाऽ-
र्जुन-प्रतापाऽऽवलि—लब्धमाना ।
भीमोक्त वाक्य श्रुति सावधाना
भाति स्म या पाञ्चनदी-समाना ॥

(७१)

रानी साहेबा कैं कुमार बहादुर श्रीमान् कृष्णानन्दसिंह क अभ्युदय सँ अत्यन्त सन्तुष्ट होइत, एवं अर्जुन (धवल) प्रताप समुदाय क बलैं पूर्ण सम्मान प्राप्त करैत, ओ भीम (श्रीयुत बाबू भीमनाथ मिश्र) क वाक्य सुनवा मे सावधान रहैत देखि बहूत लोक क कल्याना शील हृदय, एहि कल्पना तक पहुचैत छल जे प्रातः स्मरणीया द्रौपदीए तने रानी साहेबा क रूप में दृष्टि गोचर भै रहलि छथि ? किएक तँ भगवान् श्रीकृष्ण क उदय सँ ओ हो हर्ष प्राप्त करैत छलीहि। गाण्डीव धारी अर्जुन क प्रताप हुनको पूर्ण सम्मान प्राप्त छलैन्हि। गदाधारी भीम क वाक्य सुनवा मे ओहो कखनहु असावधान नहि रहैत छलीहि।

कुमार बहादुर श्रीमान् कृष्णानन्दसिंह विशिष्ट ओजस्वी आखेट कौतुकी, साहित्य सेवी, मैथिल युवक छथि। ई सुल्तानगञ्ज भागलपुर मे रहैत छथि। हिनक निवास भवन "कृष्ण गढ़" शब्दैं व्यवहृत अछि। हिनके ओतए किछु दिन क हेतु मिथिला मित्र (मासिक



बाबू श्री जगदीश ठाकुर

मैथिली पत्र) उदय पौने छलाह। हिनके लग सँ उठि कँ हलधर (हिन्दी पत्र) लोक कँ कृषि शिक्षा-व्रत-ग्रहण करा रहल अछि । हिनके कृष्ण गढ़-गङ्गोत्री सँ निकलि वहनिहारि "गङ्गा" (उत्कृष्ट सचित्र मासिक हिन्दी पत्र) क विमल धारा सँ सहृदय क हृदय पर्य्यन्त-सिक्तता प्राप्त कैने अछि।

ई स्वर्गीय राजा कलानन्दसिंह क द्वितीय पुत्र थिकाह। हिन शुभ जन्म १६७मे भेल। नित्य-नैमित्तिक कर्म क अनुष्ठान मे ई अत्यन्त तत्पर रहैत छथि। दानशीलता हिनक एहने अछि जे अपन पितामह राजा लीलानन्दसिंह क समान ईहो लोक सँ "कलि कर्ण" कहावै लागल छथि।

श्रीमान् बाबू भीमनाथ मिश्र विशिष्ट सप्रतिभ, उच्च अंग्रेजी शिक्षित छथि। ई एखन गभर्नमेन्ट क "डिपुटी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस" पद पर आसीन छथि। ई स्वर्गत राजा पद्मानन्दसिंह क दौहित्र अतएव स्वर्गत कुमार चन्द्रानन्दसिंह क भागिनेय छथि। हिनक वाक्य पर रानी साहेब कँ बड़ श्रद्धा छल।

टिप्पणी—ई पहिनहुँ लिखल गेल अछि। जे राजा पद्मानन्दसिंह क छोटि कन्या मोती दाइ क सन्तति-रत्न श्रीभीमनाथ बाबू थिकाह। ई तीनि भाँई छथि छोट दू भाँइ क नाम—बाबू श्रीबुद्धिनाथमिश्र ओ बाबू श्री रावणेश्वर मिश्र थिकैन्हि। श्रीबुद्धिनाथ बाबू रानी पद्मावती क स्मारक संस्था तारा मन्दिर क अन्यतम ट्रष्टी छथि। श्रीरावणेश्वर बाबू उच्च अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कै बी. ए. उपाधि पौने छथि।

प्रभावती हृन्मुदमादधाना-
प्रभावती-हृन्मुदमादधाना ।
श्यामाऽऽननाम्भोरुहदृष्टिहृष्टिः
श्यामाऽऽननाम्भोरुहदृष्टिहृष्टिः ॥

(७२)

वहुत लोक क ई स्वभाव होइछ जे विना कारणहुँ कलुषित हृदय वनल रहैछ। किन्तु रानी साहेबा मे ई वात नहि छल। ई सर्वदा प्रभा-सम्पन्ना रहैत छलीहि। कारण हिनक विशुद्ध अन्तः करण सर्वदा सन्तुष्ट रहैत छल। एवं श्रीमती रानी प्रभावती क हृद्गत प्रसन्नता कैं खूब पुष्ट करैत छलीहि। स्वस्थापिता भगवती श्रीश्यामा तथा श्रीमान् कुमार श्यामानन्दसिंह क आनन दर्शन सँ अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त करैत छलीहि।

टिप्पणी—श्रीमती रानी प्रभावती राजा बहादुर कीर्त्यानन्दसिंह महोदय क धर्म पत्नी तथा श्रीमान् कुमार श्यामानन्दसिंह आदि सन-छौ पुत्र रत्न क जननी छथि। श्रीमान् कुमार श्यामानन्दसिंह अत्यन्त सङ्गीत-प्रिय तथा विशिष्ट दानी छथि। हिनक दान प्रियता क परिचय एही सँ भेटि जाइछ जे किछुए दिन बीतल अछि, ई हिन्दी साहित्य सम्मेलन कैं १०००० दश हजार टाका क दान भवन-निम्माणार्थ देने छथि। अतिरिक्त पाँच भाँइ'क नाम क्रमिक क श्रीविमलानन्दसिंह श्रीतारानन्दसिंह, श्रीदुर्गानन्दसिंह, श्रीजयानन्दसिंह ओ श्रीनूनूजी अछि।

न साऽऽदरा केवल मेव पङ्का-
ज्ञाते हि पद्मे कमलाऽऽलये या।
बद्धाऽऽदरा-किन्तु सदैव पङ्काऽ
कलङ्कि पद्मे कमलाऽऽलयेऽपि ॥

(७३)

रानी साहेबा केवल भगवती लक्ष्मी क आधार भूत ओही पद्म (कमल) मे आदरवती नहि छलीहि जे पाँक सँ सम्बन्ध रखैत छल। अपितु कमला क आलय ओहू "पद्म" मे पूर्ण आदरवती छलीहि जे पङ्क स्पर्श रहित छल। अभिप्राय ई जे रानी पद्म सुन्दरी क ओतयः हिनक पूर्ण आदर बुद्धि छल। रानी पद्म सुन्दरी स्वर्गीय राजा पद्मानन्दसिंह क द्विती धर्म पत्नी छथि। ई अधिक काल काशिअहिं रहैत छथि। ओजस्वी कुमार सूर्य्यानन्दसिंह क उत्पत्ति हिनके विमल उदर सँ छल। जनिका दुर्दैव एहि लोक मे नहि देखै चाहल क। और यौवनाऽवस्था-स्वर्गहिं मे वितैबाक परवाना काटि लोक कँ सन्तप्त कैए कँ छोड़लक।

गङ्गाऽऽलाप-प्रसन्नाऽऽस्या
या लोकै रवलोकिता ।
गङ्गाऽऽलाप-प्रसन्नाऽऽस्या
या लोकै रवलोकिता ॥

(७४)

अत्यन्त सवेर उठवाक अभ्यास रानी साहेबा कैं बाल्यावस्थहिं सँ छल । जकर उल्लेख पहिनहुँ भै आएल अछि । तदनुसार खूब सवेरे ऊठि पतित पावनी भगवती गङ्गा क नाम कीर्तन सँ पूर्ण प्रसन्ना देखलि जाइति छलीहि । एवं भक्त्या भेँट क हेतु समागत श्रीनगराधीश श्रीमान् कुमार गङ्गानन्दसिंह क सङ्ग आलाप कै पूर्ण प्रसन्नता लाभ करैत देखलि जाइत छलीहि ।

टिप्पणी—ई पद्य अनेकाऽर्थक अछि । यथा ई गङ्गा (रानी साहेबा) लोक सँ आलाप करैत प्रसन्नाऽऽस्या देखलि जाइत छलीहि ।

अभिप्राय जे गङ्गोत्री सँ निकलि वङ्ग महासागर मे मिलनिहारि भगवती गङ्गा पुण्य मयी होइतहु लोक सँ गप्प सप्प नहि कै सकैत छथि अथवा लोक सँ तत्प्रयुक्त प्रसन्ना नहि देखलि जाइत छथि। किन्तु एहि गङ्गा मे ई विशेषता छल। अथवा हिनका गङ्गा नामोच्चारण सँ प्रसन्न होइत "आलोक" सूर्य्य क प्रभे देखैत छल। अभिप्राय ई जे एतेक सवेर ई उठैत छलीहि जे तखन हिनका केओ लोक नहि देखि सकैत छल केवल मृदु सूर्य्य-प्रकाश मात्र देखि सकैत छल।

वर्त्तमान श्रीगराधीश कुमार श्रीमान् गङ्गानन्दसिंह एही बनैली राज्य-वंश क उज्ज्वल रत्न छथि। जकर परिचय पाठक श्रीनगर राज्य प्रवर्त्तक राजा रुद्रानन्दसिंह क पूर्वोल्लेख सँ पौने हैताह। ई श्रीमान् क सङ्ग सङ्ग विशिष्ट विद्वानो छथि। अनेक वेर बड़ा लाट क काउन्सिल क सदस्य रहि चुकल छथि। तथा एखनहुँ अपर चेम्वर क मेम्बर छथि। ई ओही श्रीनगराधीश साहित्य सरोज स्वर्गीय राजा कमलानन्दसिंह क ज्येष्ठ पुत्र थिकाह जे संस्कृत साहित्य क पतनयुगहुँ मे स्वर्गीय अम्बिकादत्त व्यास कैँ काव्य-पुरस्कार रूप मे गजराज देने छलाह। तथा "साम्ब कमलानन्द कुल रत्न" नाम क उत्कृष्ट काव्य रचना क ऊपर पं० श्री श्रीकान्त मिश्र कैँ १२०० टाका पुरस्कार देने छलाह।



पीताम्बराऽऽराधन हृष्ट-चित्ता
पीताम्बराऽऽराधन हृष्ट-चित्ता ।
पीताम्बराऽऽराधन हृष्ट-चित्ता
पीताम्बराऽऽराधन हृष्ट-चित्ता ॥

(७५)

ई अनेक ठाम वर्णित भै चुकल अथि जे रानी साहेबा क पूजा-पाठ पर बड़ आस्था छलैन्हि। ब्राह्मण द्वारा तँ अनुष्ठान करबितँहिं छलीहि, सङ्गहिं अपनहुँ नीक जकाँ पूजा करैत छलीहि। पूजाकाल क ई नियम छल जे पीताम्वरीए पहिरि पूजा-पाठ करैत छलीहि। पूज्य देवता क विषय मे हिनक दृष्टि, शान्त तथा उग्र दूहू तरहक देवता दिस छल। पीताम्बर भगवान् विष्णु क सन सात्विक देवता क आराधन सँ यदि प्रसन्नता लाभ करैत छलीहि तँ पीताम्बरा भगवती वगला-मुखी सन उग्र देवताहुँ क उपासना सँ।

ई अपन पितिऔत भाए श्रीपीताम्वर झा सँ कैल गेल अनुव्रजन सँ पूर्ण प्रसन्ना रहैत छलीहि।

टिप्पणी ८—श्रीपीताम्वर झा उच्चकोटि क शिक्षित मैथिल छथि। ई पटना हाइकोर्ट क एडभोकेट छथि। रानी साहेवा क पिता श्रीउग्रीझा तीनि भाँइ छलाह कुलमणिझा भाँइ लालझा ओ उग्रीझा। जाहिमे कुल-मणिझा क वालक तीनि गोटे छथि। श्रीगोवर्द्धनझा वी.ए.वी.टी, श्रीचित्रधरझा, श्री पीताम्वर झा (जनिक उल्लेख उपर कैल गेल अछि)भाइ लालझा क वालक छथि श्रीयुत काशीनाथझा। ई अङ्गरेजी शिक्षित होइतहुँ अद्वैत वेदान्त क नीक ज्ञाता छथि। "प्रस्थान त्रय प्रकाशिका" नाम क उपादेय ग्रन्थ हिन्दी भाषा मे लिखने छथि। हिनका ऊपर रानी साहेवा क वेस आदर दृष्टि छल। जकर प्रमाण ई भेटैछ जे मरण क अनन्तर अपन शरीर-दाह क भार हिनके ऊपर दै गेलीहि। तथा श्यामा मन्दिर क ट्रष्टिओ हिनका वना गेलीहि।



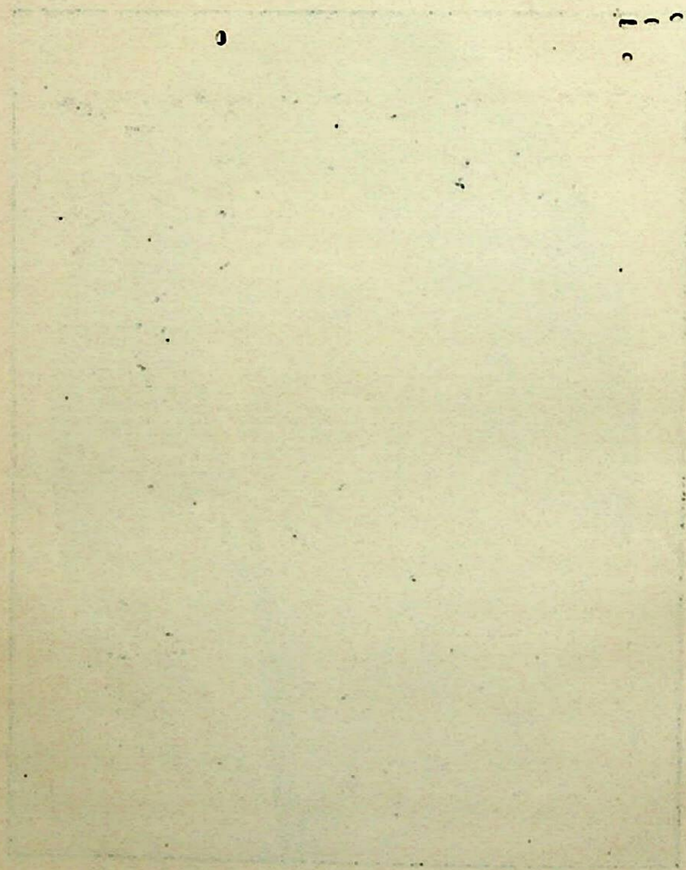
या लक्षसम्मित-धनस्य समर्पणेन-
स्वोद्भासि-भागलपुरे महिलाजनानाम् ।
भैषज्य-मन्दिर ममन्दमति-स्सतीय-
मुज्जीवितं समकरोत् करुणा-विकाशात् ॥

(७६)

रानी साहेबा तीर्थभ्रमण सँ अतिरिक्त काल क हेतु अपन वासस्थान भागलपुरहिं कैं बनोने छलीहि। अतएव भागलपुर क सामाजिक संस्था दिस हिनक उपकार-दृष्टि हैब स्वाभाविक छल। जकर सुफल ई भेल जे उक्तनगर-स्थित "शिवतारिणी हौसपिटल" नाम क स्त्री चिकित्सालय क आर्थिक दशा अत्यन्त अधःपतित भेल देखि, करुणा-परायणा रानी साहेबा लाखो टाका क दान दै उक्तसंस्था कैं जीवन-दान देल। जाहि सँ अर्थ हीना ओहि दुःखिनी ललना लोकनि क हेतु, चिकित्सा व्यवस्था स्थिर रहि सकल जे कुलीना हैबाक कारण पुरुष चिकित्सालय मे जाएब पसिन्द नहि करैत छलीहि।



बाबू श्री उमानाथ झा बी० ए०



टिप्प०—हिनक डेउढ़ी पर कार्य्य-सञ्चालक क रूप मे श्रीघनश्याम सुन्दर झा श्रीयशूझा तथा श्रीचन्द्रिका प्रसाद तीनि व्यक्ति रहैत छलाह। श्रीघनश्यामसुन्दरझा कैँ सम्बन्धी वर्ग क देख-रेख रखबा क, श्रीयशूझा कैँ याचक वर्ग क इतलाए दै हुनक विदाइ करबा क, मुन्सी श्रीचन्द्रिका प्रसाद कैँ कचहरी आदि सम्बन्धी राज कार्य्य क विशिष्ट भार छल।

कुटुम्ब वर्ग मे डेउढ़ी पर स्थायी रहनिहार दू व्यक्ति छलाह। श्रीजगदीश ठाकुर ओ श्रीशोभानाथ ठाकुर। ई दूहूँ गोटैँ सहोदर भाए क जमाए हैबाक कारण रानी साहेबा क जमाए छलाह। एतय हिंनका लोकनिक पूर्ण आदर छल। श्रीजगदीश ठाकुर क ऊपर तँ रानीसाहेबाक एतेक श्रद्धा छल जे हिनका श्यामा मन्दिर क ट्रष्टिओ नियुक्त कै गेलीहि। रानी साहेबा श्रीघनश्यामसुन्दर झा क भागिनेयी (भगिनी) छलीहि। श्रीयशूझा सम्बन्धैँ कुमार चन्द्रानन्द सिंह क मसिऔत भाए छलाह। अतएव रानी साहेबा सम्बन्ध मे हिनका भावहु पड़ैत छलीहि। ईहो दूहू गोटैँ आब श्यामा मन्दिर संस्था क प्रमुख कर्म्मचारी छथि।



श्री हरिनन्दन शर्म्म-
द्वारा सम्पन्न-भवनभरभूषम् ।
श्रीमच्छ्यामा-मन्दिर-
मथाऽभिवीक्ष्याऽगमत्तोषम् ॥

(७७)

रानी साहेबा जखन श्यामा मन्दिर क निर्म्माण करावै चाहने रहथि, तखन बहुत सोचि विचारि उक्त मन्दिर क निर्म्माण कार्य्य क भार श्रीयुत हरिनन्दन ठाकुर पर देने छलीहि। श्रीहरिनन्दन ठाकुर क कार्य्य कुशलता सँ परिचित हैवाक कारण ई छल जे ई रानी साहेबा क सहोदर भाए गीतादत्त झा क श्वसुर छलाह। रानी साहेबा क इच्छा पूर्ण भेल। ई एहन सुन्दर मन्दिर समुदाय तथा सुभग-भवन-माला क निर्म्माण कराओल एवं कार्य्य सञ्चालन क व्यवस्था कैल जे, देखि कँ रानी साहेबा क हृदय प्रफुल्लित भै उठल।

टिप्पणी—श्रीहरिनन्दन ठाकुर सिंहवाड़ निवासी प्रतिष्ठित तथा यशस्वी व्यक्ति छथि। ई अपन बुद्धि मत्ता क बलैं जीवन क प्रथमे अवस्था सँ स्वर्गीय चौधरी मुनीन्द्रनारायण ठाकुर सिंहवाड़ महोदय क मन्त्रिपद पर आसीन भेलाह। एवं एखनहुँ ओहीठाम हुनक बालक श्रीमान् चौधरी श्रीकेदारनाथ ठाकुर जमीन्दार सिंहवाड़ इष्टेट महोदय क मन्त्रि पद पर आसीन छथि। श्यामा मन्दिर क निर्म्माणो ई ओहि स्थान पर रहितहिं करौलन्हि।

एतन्मूल–धनस्य
व्ययमिह कर्त्तुं न शक्नुयात् कोऽपि ।
तल्लब्ध-द्रविणेना–
ऽखिल कार्य्यं स्यादिति व्यलिखत् ॥

(७८)

परम बुद्धिमती रानी साहेबा अपन श्यामामन्दिर संस्था कँ अमर बना देबाक हेतु रजिष्ट्री क मोसाविदामे एहू विषय क स्पष्ट उल्लेख कैल जे एहि संस्था क मूल धन क कहिओ क्यौ कोनो हेतु क व्यय नहि कै सकैछ । केवल ओहि सँ आएल सूद सं सभ काज चलाओल जाएत ।

श्यामा-मन्दिर-कोषं
सपादलक्षाऽर्पणेन वरराज्ञी ।
पुनरपि वर्द्धितमकरो-
द्धार्म्मिक-जन-रक्षणव्यग्रा ॥

(७६)

रानी साहेबा क कमल-निर्म्मल हृदय, सतत धार्म्मिक लोक क रक्षा क हेतु व्यग्र रहैत छल। अत एव तदर्थ पूर्ण सचेष्टा रहैत छली-हि। ई पहिनहिं सूचित कैल जा चुकल अछि जे पूर्व दान क अवसर पर ई प्रतिज्ञा कै चुकलि छलीहि जे आइ सँ जे हमर वैयक्तिक धन एकट्ठ हैत से श्यामा मन्दिरहिं क स्थायी कोष मे देल जाएत। एवं मरणानन्तरो जे किछु हमर वैयक्तिक चल वा अचल सम्पत्ति रहत, तकर उत्तराधिकारी एहि संस्था क स्थायी सम्पत्ति हैत। तदनु सार उक्त स्थायी कोष कैं सावा लाख टाका क दान दैं शीघ्र अपन प्रतिज्ञा कैं कै देखौलन्हि।

आयः षण्णां सहस्राणां
बनैली राज्यतो भवेत् ।
प्रत्यब्दमिति सद्राज्ञी
व्यवस्थितिमकल्पयत् ॥

(८०)

बुद्धिमती रानी साहेबा अपन अनल्प बुद्धि क बलैं इहो व्यवस्था कैलन्हि जे एहि श्यामा मन्दिर संस्था कैं बनैली राज्य क किछु भाग सँ नियमतः प्रतिवर्ष ६००० छौ हजार टाका भेटल करै, जे कि देवता क पूजन विभाग मे खर्च हो । एहि मे रानी साहेबा क अभिप्राय ई छल जे किछु टाका यदि वार्षिक बनैली राज्य सँ एहि संस्था क भेटैत रहतैक तँ बनैली राज्य क अधिपतिक एकरा दिस ध्यान बनल रहत । जाहि सँ संस्था क सञ्चालन पद्धति में दोष नहि प्रवेश कै सकत । कारण ई दोष प्रायः कालान्तरैं अनेक संस्था मे देखल जाइछ जे सञ्चालक वर्ग, ओहि लोक क समुचितो इच्छाक विरुद्ध सञ्चालन सुरुह कै दैछ, जकर कुल क धन सँ ओ संस्था जन्म पौने रहैछ ।

रानी साहेबा क मनोरथाऽनुसार कुमार बहादुर श्रीमान् रमानन्द सिंह तथा कुमार बहादुर श्रीमान् कृष्णानन्द सिंह दूहूँ भाँइ उक्त ६००० हजार टाका देब सहर्ष स्वीकार कैल ।

टिप्पणी—ई प्रतिज्ञा सम्भवतः रानी साहेबा ओहि अवसर पर बनैली राज्य क किछु भाग सँ कराओल, जखन कि ऋण सधैबा क हेतु अपन हिस्सा क किछु भाग लिखलन्हि ।

साधुतया सञ्चालन–
कार्य्यं समितिः करोति नहिकिंवा ।
एतद्विशद–परीक्षा–
भारं चिक्षेप भारताऽधीशे ॥

(८१)

रानी साहेवा पाँच सदस्य क एक समिति स्थापित कैल । जकर अधिवेशन वर्ष मे ४ वेर भेल करै । और एही समिति क द्वारा निर्णीत धन क खर्च,वर्ष मे ओ व्यक्ति कै सकथि, जे सदस्य, प्रधान प्रवन्ध कर्त्ता भै श्यामा मन्दिर काशी मे विद्यमान रहथि । ई समिति उचित रूपैं खर्च करैछ वा नहि, एकर निरीक्षण क पूर्ण भार औफीसियल ट्रष्टी आफ वङ्गाल क द्वारा भारत सम्राट क हाथ मे देल। जाहि सँ एकर मूल धन पूर्ण सुरक्षित रहै। तथा सूद क दुरुपयोग नहि, सदुपयोग हो । ऊपर लिखित समिति क पाँच सदस्य मे श्रीमान् कुमार वहादुर रमानन्द सिंह, वावू श्री सुरजा प्रसाद वकील भागलपुर, श्रीकाशीनाथ झा, श्रीजगदीश ठाकुर, श्रीउमानाथ झा, छिनका लोकनि क नाम निर्द्धारित भेल ।

टिप्पणी—वाबू श्रीसुरजा प्रसाद पहिनहुँ सदस्यता नहि चाहैत छलाह। जखन रानी साहेबा क देहान्त भै गेलैन्हि जकर उल्लेख आगाँ हैत, तखन ओ एहि समिति क सदस्यता क त्याग ई कहि कै देल जे हम आब सभ प्रपञ्च छोड़ि काशी वास कै रहल छी। हमरा बुतेँ ई कार्य्य-भार नहि लेल जा सकैछ। तखन ओहि स्थान पर पं. श्री उपेन्द्रनाथ झा एम. ए. एल. एल. वी महोदय निर्वाचित भेलाह। ई एक विशिष्ट गुणज्ञ व्यक्ति छथि। एखन कुमार वहादुर श्रीमान् रमानन्द सिंह महोदय (मैनेजिङ्ग मेम्बर) क प्रतिनिधि रूपँ श्यामा मन्दिर क मुख्य प्रबन्धको (रिजायडिङ्ग मेम्बर) यैह छथि।

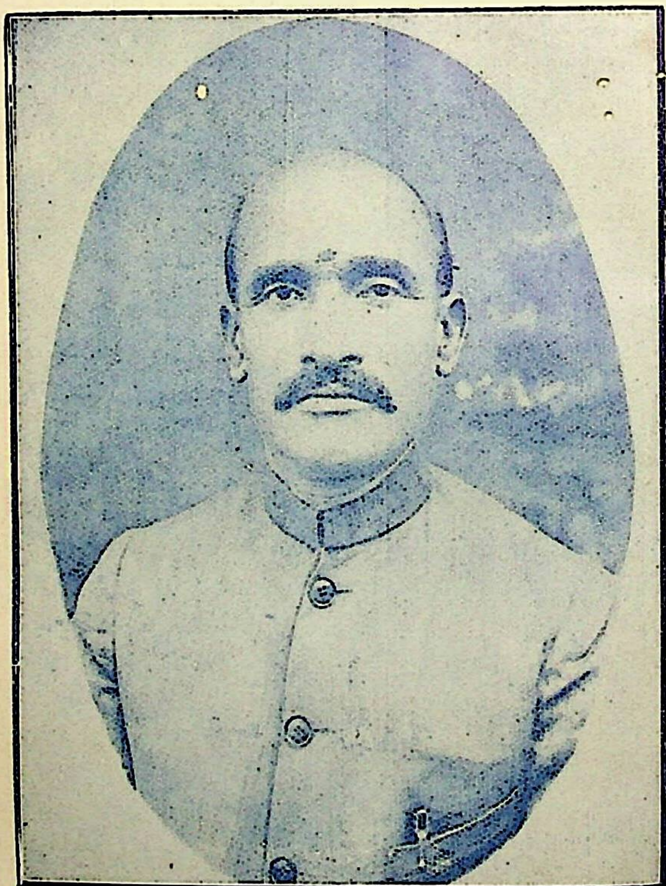


महार्ह–मणिमारभ्य
सूच्यन्तं यदभूद्धनम् ।
श्रीश्यामा–मन्दिरायैव
ददौ नियम–तत्परा ॥

(८२)

"हमर जे किछु धन रहत से श्यमामन्दिरहिं मे देव" एहि पूर्व वर्णित प्रतिज्ञा क अनुसार अपन समस्त सम्पत्ति, जे कि हुनक स्त्री धन छल अर्थात् वस्त्र, सोना, चानी क गहना, जमाहिरात, कोठी आदि चल तथा अचल हीरा सँ लै सूइ पर्य्यन्त, जकरा लोक हिङ सँ हरदि धरि कहैछ, दान पत्र लिखि श्यामामन्दिर ट्रष्ट मे दै देल।

टिप्पणी—एहि संस्था मे मुख्यतया एतेक विभाग अछि। देवता लोकनि क पूजन, भोगराग पर्वोत्सव, ब्राह्मण (मैथिल) भोजन, संस्कृत विद्यालय, छात्राऽवास, पुस्तकालय, औषधालय, छात्रवृत्ति,



पं० श्री उपेन्द्रनाथ झा, एम० ए० एल० एल० बी०

अनाथरक्षण, धर्मशाला, विधवा काशी वासिनी (मैथिल ब्राह्मणी) कैं सहायता, काशी वासी (मैथिल ब्राह्मण) कैं सहायता, गरीब मृतक (मैथिल ब्राह्मण शव) क दाह व्यवस्था । कुमार चन्द्रानन्द सिंह तथा रानी चन्द्रावती क वार्षिक श्राद्ध-तिथि क अवसर पर ब्राह्मण भोजन । अन्नदान तथा वस्त्र दान ।

ब्राह्मण भोजन तीनि भाग मे विभक्त कैल जा सकैछ । विद्यार्थी क भोजन' काशीवासी क भोजन ओ अभ्यगत भोजन । संस्कृतविद्यालय मे सम्प्रति पाँच अध्यापक छथि । प्राचीन नवीन न्याय वैशेषिकाध्यापक, व्याकरण साहित्याध्यापक, वेद कर्मकाण्डाध्यापक, त्रिस्कन्ध ज्यौतिषाध्यापक, सांख्य-योग-मीमांसा-वेदान्ताऽध्यापक, । छात्र संख्या वर्त्तमान काल मे २०० करीब अछि । छात्रावास क कार्य्य किराया पर अनेक मकान लै चलैछ । पुस्तकाऽऽलय एखन साधारण कोटिक अछि । दातव्यऔषधाऽलय क फल नीक अछि । छात्रवृत्ति क तीनि विभाग कैल जा सकैछ, (१) विद्यालयीय छात्र कं शुष्कवृत्ति, (२) सीधा सहित वृत्ति । (३) अंग्रेजी पढ़निहार किछु छात्र कैं स्वतन्त्र वृत्ति ।



श्यामा–मन्दिर–संस्था–
मूलधनत्वं जगाम ननु यस्मात् ।
हरनेत्र चन्द्र लक्षित–
लक्षं किंवा श्रुतोन्दुमितलक्षम् ॥

(८३)

उक्त उच्चतम दान क अनन्तर श्यामामन्दिर संस्था क मूल धन तेरह वा चौदह लाख करीब भै गेल। ई अन्तिम दान रानी साहेबा क सर्वस्वदान छल। जकर फल अमोघ अछि। मरै सँ मात्र पन्द्रह दिन पूर्व भेनिहार दान पत्र सँ ई स्पष्ट प्रतीत होइछ जे रानी साहेबा कैं अपन पुण्य क प्रतापैं निकट समय मे भेनिहार अपन मरण क भान भै गेलैन्हि। अत एव शीघ्रता सं अपन सभ अन्तिम व्यवस्था सुचारू रूपैं कै गेलीहि।

टिप्पणी–तेरह वा चौदह एहि रूपैं एहि हेतु लिखल गेल जे बहुत वस्तु क मूल्य, विक्रय क अनन्तरे निर्णीत भै सकैछ।

या लन्दने लसति काचन पारसीक-
प्रख्यातनीतिविदुषी खलु मिस्सोराब्जी।
आहूय तां तदुपदिष्ट-पथा परोक्ष-
कृत्यव्यवस्थितिदलं सहसा लिलेख ॥

(८४)

ई विषय अनेक वेरि पहिने वर्णित भै चुकल अछि जे रानी साहेबा प्रत्येक कार्य्य खूब बूझि सूझि करैत छलीहि। जखन अपन मरण क अनन्तर-भावी क्रिया विधान क सम्बन्ध मे रजिष्ट्री करबाक विचार मन मे अएलैन्हि, तखन ओहि सम्बन्धमे स्वयं परामर्श करबाक हेतु एक पैघ स्त्री-वैरिष्टर क आवश्यकता क वोध कैलन्हि। तदनुसार लण्डन मे वैरिष्टरी कैनिहारि प्रख्यात पारसी महिला मिस सोराब्जी कैं बजाए हुनका सङ्ग एहि सम्बन्ध मे पूर्ण विचार कै एक "विल" वसीयतनामा लिखलन्हि। जाहि मे अपन मरण क अनन्तर भेनिहार समस्त कृत्य क उल्लेख कैल गेल।

(युग्मकम्)

दानाम्भोधि-समुद्गताऽतिचपला देशे विदेशे तथा
यास्याः क्वापि नियन्त्रणं कथमपि प्राप्तानकेषामपि ।
श्रान्ता सम्प्रति सैव किं भगवती विश्रान्तिकामाऽगतिः
कीर्त्तिर्मूर्त्तिमती विराजतितरां देवी नु पद्माऽऽलया ॥

(८५)

इति समतर्कयदखिला
जनता जनतापनाशनपरायाः ।
देव्याश्चन्द्रावत्याः
विलोकयन्ती यशोराशिम् ॥

(८६)

ओना तँ रानी साहेबा क यशोधारा पहिनहिँ सँ अविछिन्न रूपैं प्रवाहित भै रहल छल। विशेषत: एहि सर्वस्व दान सँ ओ एतेक व्यापकता कैं धारण कैलक जे मुग्ध जनता क हृदय मे, हिनका सँ स्थापिता "भगवमती–महालक्ष्मी मूर्त्ति" क विषय मे ई कल्पना जेना उत्थान पावै लागै जे–दान जल–समुद्र सँ उत्पन्ना, देश क कोन कथा जे विदेशहुँ तक ककरहु सँ नहि रोकलि गेनिहारि, अत एव अत्यन्त चपला, रानी साहेबा क कीर्त्तिए तने विश्व-भ्रमण प्रयुक्त स्थग्नता प्राप्त कै विश्राम क इच्छा सँ मूर्त्ति धारण कैं एहि महालक्ष्मी क रूप मे एहि श्यामामन्दिर बीच वैसलि छथि ?।

टिप्पणी–भगवती लक्ष्मी देवी समुद्र जल सँ निकललि छथि। और हिनक कीर्त्ति, दान–जल सँ। भगवती लक्ष्मी देवी एहनि छथि जे, की देश–वा की विदेश, कतहु ककरो रोकने रोकलि नहि जाइत छथि। हुनका जखन राज भवन सँ प्रस्थान करबाक इच्छा होइन्हि तँ केओ नहि रोकि सकैछ। राजा क तोप तरूआरि बन्दुक प्रभृति स सुसज्जित पहरूदार ठाढ़े भेल रहताह और ओ बाहर निकलिए कँ विश्राम लैत छथि। रानी साहेबा क कीर्त्तिओ, ककरो सँ रोकलि नहि गेलि। तहिं तँ समुद्र पारवर्त्ती सम्राट् सँ हिनका उपाधि देओलक। अत एव हिनक कीर्त्ति मे लोकक महालक्ष्मी–भावक कल्पना सामञ्जस्य रखैत छलि।

सद्धर्माऽचरणोत्थ-सत्वविकशत्तत्त्व-प्रकाशान्विता
नाना-धार्मिककृत्य-बद्धहृदयाप्याचान्तगङ्गाजला ।
निस्सारं भुवनं समीक्ष्य परया भक्त्या स्मरन्तीशिवं
सोमं सा सहसा सतीकुलमणिःकायं जहौ नश्वरम् ॥

(८७)

यद्यपि रानी साहेबा क हृदय एतेक पैघ दानहुँ क अनन्तर धार्मिक परोपकाराऽऽचरण सँ सन्तोष नहि पावि चुकल छल । तथापि एतेक पैघ पैघ धार्मिक अनुष्ठान क प्रतापेँ बढ़ल सत्त्व गुण, ओतय वैराग्य बीज क वपन कैए कँ छोड़लक । जकर परिणाम ई भेल जे संसार क वास्तविक असार रूप देखि, निस्सीम भक्ति पुरस्सर भगवती भवानी सहित भगवान् शङ्कर क स्मरण ओ गङ्गाजल पान करैत सहसा अपन नश्वर शरीर कँ त्यागि देल ।

टिप्पणी—रानी साहेबा क हृदय मे एकर प्रचुर अभिलाषा छल जे भागलपुर मे एक संस्कृत महाविद्यालय (कालेज) स्थापित हो । विहार संस्कृत एसोसिएसनक सेक्रेटरी श्रीमान् पं० ईश्वरीदत्त शास्त्री दौर्गादत्ति महोदय जखन एतदर्थं भागलपुर गेल छलाह, तखन रानी साहेबा एहि मे अपन पूर्ण अभि रूचि प्रकाशित कैने छलीहि । यदि किछुओ दिन रानी साहेबा और रहितथि तँ भागलपुर क ई त्रुटि अवश्य दूर होइत ।

सा द्वीप-वाण-गज-भू-मितशाक-माघ
शुक्लाऽनुविद्ध–नवमी शनिदृष्टिदुष्टा ।
क्रूरा पिशाच-हृदया सहसा जहार
हाहाऽतिजर्जर–सनातनधर्म–यष्टिम् ॥

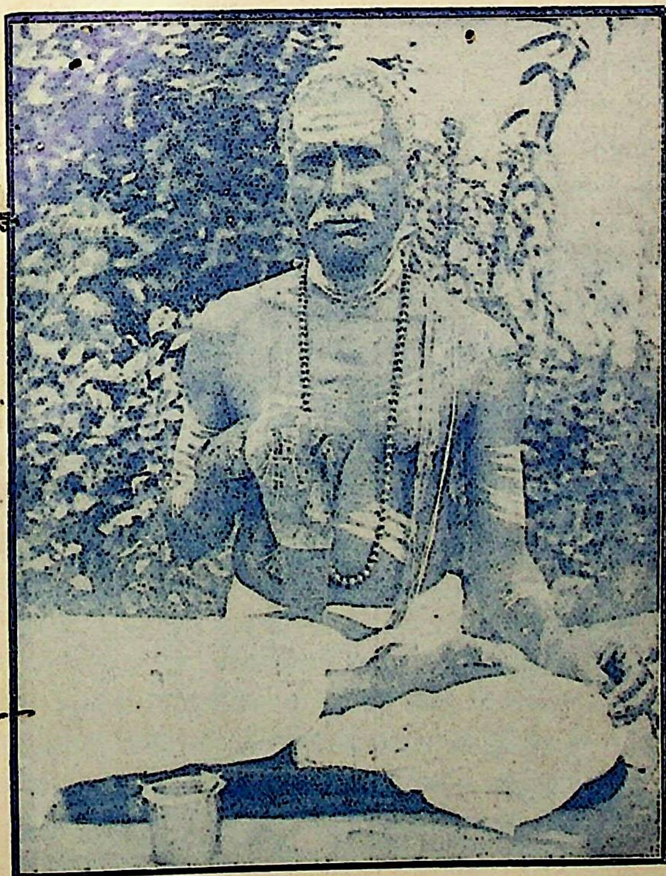
(८८)

रानी साहेबा संसार क असारे बूझि किऐक ने एतए सँ विदा भै जाथु । किन्तु जे लोक एहि लोक पर छल तकरा हेतु की ई कनेक टा खेदक विषय भेल जे पिशाचक समान हृदय रखनिहारि, क्रूरतमा, शाके १८५७ क शनि सम्बन्धवती दुष्टा नवमी एहि अत्यन्त जर्ज्जर कलेवर सनातन धर्म्मक ओहि यष्टि (छँड़ी) कँ हरि लै गेल, जे एकर प्रधान अवलम्बन छल ।

रानी साहेबा मरण सँ किछुए मास पूर्व, काशी सँ भागलपुर गेलि छलीहि । यद्यपि हुनका काशी सँ जैबाक इच्छा नहि छलैन्हि किन्तु इच्छा नहिओ रहैत जाए एहि लेल पड़लैन्हि जे अन्तिम दानपत्र ओ वसीयत नामा आदिक रजिष्ट्री क हेतु हिनक हृदय सोत्कण्ठ भै उठल । विचारलन्हि जे शीघ्र सभ व्यवस्था कै आबि आब बराबरि एहीठाम रहब । एही अभिप्रायेँ प्रायः बहुत वस्तु, जे कि

नित्य व्यवहार मे अवैत छल, श्यामा मन्दिरहिं मे राखि गेलि छलीहि। अभिप्रेत सभ व्यवस्था तँ सुचारु रूपैं लिखित भै गेल, किन्तु अपन नैहर कोइलख मे भातिजक उपनयन प्राप्त छलैन्हि। जकर सम्पादनार्थ अपन कर्मचारी लोकनि कैं पठैबाक छलैन्हि, अतएव विचारलन्हि जे एतबा दिन आव भागलपुरहिं रहि जाइ, और वाद काशी यात्रा करी। यात्रा क हेतु दिन पर्य्यन्त तकवा रखलन्हि। ओम्हर अपन माए ओ श्री घनश्यामसुन्दर झा (माम) आदि विशिष्ट प्रवन्धक कैं उपनयन क नीक रूपैं सम्पादनार्थ कोइलख पठाओल।

एम्हर हिनका साधारण ज्वर होमैं लगलैन्हि। जे डाक्टर बराबरि हिनक चिकित्सा करैत आएल छसाह हुनके चिकित्सा चलि रहल छल, वीच में किछु सन्तरा आदि क रसो देल गेलैन्हि। किन्तु एकाएक किछु ज्वर क प्रकोप बढ़ि अएलैन्हि और अपन पाञ्चभौतिक शरीर कैं पञ्चभूत में मिलवाक आदेश दैत एतए सँ बिदा भै गेलीहि। हिनक मरण मे विशेषता ई देखल गेल जे कष्ट नहि भेलैन्हि। जाहि माघ शुक्ल नवमी शनिक नौ वजे करीव दिन मे हिनक परलोक-प्रयाण भेल ओहि सँ अव्यवहित पूर्व राति मे खूव बढ़िआँ जकाँ सुतलीहि। प्रातः काल लोक क पुछलाउत्तर कहलथिन्हि जे राति खूव नीक जकाँ निद्रा भेल। मन वेस प्रसन्न अछि। आइ पथ्य मे पटुआ क झोर और भात खाएव। लग मे वैसल अपन परिचारक वर्ग कैं कहलथिन्हि जे तोहूँ सभ आव स्नानाऽदि कृत्य जलदी कै आवह इत्यादि। किन्तु किछु काल मे नाटक क परदा जकाँ स्थिति वदलि गेल। जे



श्री घनश्यामसुन्दर झा

लोक कँ रानी साहेबा क ज्ञानपुरस्सर होइतहुँ शोचनीय मृत्यु क दृश्य देखाइये कँ छोड़लक ।

जनता मे हाहाकार मचि गेल। रानी साहेबा वसीयतनामा मे अपन शरीर क दाह करबाक अधिकार अपन पितिऔत भाए श्री काशीनाथ झा कै दै गेलि छलीहि । ई यद्यपि उक्त उपनयन मे सम्मिलित हैवाक हेतु गाम गेनिहार छलाह किन्तु सौभाग्य वश विदा नहि भै गेल छलाह अतएव शीघ्र हिनका रजौर क वासा पर खबरि देल गेल। जतै ई ओहि समय में रजौर क कुमर क गार्जियन भै स्थित छलाह। सम्वाद पौला उत्तर लगले रानी साहेबा क डेउढ़ी पर पहुँचलाह। ओम्हर रानी साहेबा क असामयिक मृत्यु क समाचार कलक्टर कमिश्नर आदि प्रधान कर्म्मचारी क अ पहूँचल। ककरो एहन खबरि नहि छलैक जे रानी साहेबा एतेक दुःखिता छथि, सभ लोक आश्चर्य्य मे पड़ल। पैघ लोक क जीवन वड़ महत्व-पूर्ण होइछ। अतएव ओकर मरण क सम्बन्धहुँ मे खूब जाच पड़ताल होइछ। तदनुसार लगले—"शव" तथा डेउढ़ी क ऊपर सरकारी कर्मचारी क नियन्त्रण आवि पड़ल। जावत सिविलसर्ज्जन "शव" क परीक्षा नहि कै लेताह तावत एतेक पैघ लोक क शव, श्मसान कोना जाएत ? भै सकैछ जे कोनो एहन वस्तुक वा ओषधि क प्रयोग भेल हो जाहि सँ ई हठात् एतै सँ विदा भै गेल होथि ? परन्तु रानी साहेबा क मृतशरीर क स्पर्श एक बिदेशी सिविलसर्ज्जन करताह, ईहो एकटा बड़का कठिन समस्या। हिन्दूधर्म्म मे अशुचि कहितहुँ शव कें सभ सँ स्पर्श होमै देवाक विधान नहि अछि। अपन बन्धु वर्ग क अतिरिक्त स्वजातिहुँक स्पर्श लोकमे निन्दिते मानल जाइछ, फेर आन लोक क स्पर्श कोना होमै देल जाए ? श्रीकाशीनाथ झा कमिश्नर साहेब क ओतै जाए एहि सम्बन्ध मे बहूत बुझाओल। ओहिठाम सँ आदेश ई भेल जं सिविल सर्ज्जन क समक्ष हिन्दू असिष्टेन्ट सर्ज्जन परीक्षा करथि।

सैह भेल। सिविल सर्ज्जन क उपस्थिति मे असिष्टेन्ट सर्ज्जन फराकहिं सँ देखि ई निश्चय कैल जे विष-प्रयोग क शङ्का नहि अछि। तखन शव श्मसान गेल। अपन दाहक हेतु टाका खर्च क निर्णय रानी साहेबा कै गेलिए छलीहि। चानन घृत तिल सरड़ गुग्गुल आदिअहि सँ गङ्गा-धारा क वीच पवित्र दीअर पर दाह कार्य्य सम्पन्न भेल।

श्राद्ध क हेतु रानी साहेबा २५००० टाका खर्च करबाक उल्लेख वसीयतनामा मे कै गेलि छलीहि। और सङ्गहिं ई हो उल्लेख कैल छल जे श्राद्ध काशिअहिं मे कैल जाए। तदनुसार कार्य्य-कर्त्ता लोकनि काशी आबि ओकर प्रबन्ध करै लगलाह। श्राद्ध करबाक अधिकारी बनाओल छलाह श्रीउमानाथ झा। रानी साहेबा हिनका माउँसि छलथीन्हि। हिनका ऊपर रानी साहेबा क बड़ पैघ ममत्व छल। ओना तँ समस्त परिवार क पोषण भार रानी साहेबा अपना ऊपर रखने छलीहे, विशेषत: हिनक समस्त शिक्षा दीक्षा रानी साहेबा क विशेष देख रेख मे भेल छल। श्राद्ध क ओरिआओन भेल। ओरिआओनक वर्णन व्यर्थ थीक। रूपैयहिं क संख्या सँ लोक ओकर अनुमान कै लेताह। आङन ओ घाट दूहू ठाम एक प्रति सभ वर्त्तन चानी क छल। पलङ पर्य्यन्त चानिअहिं क छल। सोना क गहना, तथा बनारसी शाड़ी आदि क मात्रा वेस छल। श्राद्ध पूर्ण समारोह सँ सम्पन्न भेल। देश क शताऽधिक विद्वान् निमन्त्रित भेल छलाह। काशी स्थित देशी तथा अन्य देशी जे महामहोपाध्याय छलाह सभ कैं निमन्त्रण छल। हिनका लोकनि कैं २५) ओ धोती क विशिष्ट विदाइ कैल गेल। अन्य विद्वान् कैं छौ टाका ओ धोती विदाइ देल गेल। बाहर सँ आएल निमन्त्रित विद्वान् कैं रेल किराया आदि याताऽऽयात खर्च, आदि सभ देल गेल।

कुटुम्ब करीब १००० क निमन्त्रित छलाह जनिका लोकनि कैं एक जोड़ धोती ओ ४) विदाई देल गेल। आगत व्यक्ति कैं रास्ता खर्चो।

शीघ्रता क कारण जे गुणी वा कुटुम्ब श्राद्ध समय मे नहि उपस्थित भै सकलाह तनिका गामहिं पर कँ विदाई पठा देल गेल। आवाल वृद्ध मैथिल तथा ३०० मैथिलाऽतिरिक्त विद्वान् कैं दक्षिणा सभा क रूप मे सात सात टाका दै सम्मान कैल गेल।



टिप्पणी—पश्चात किछु मैथिल कैं पाँचो टाका देल गेल। जाहि पर दू चारि व्यक्ति लेवा सँ अस्वीकारो कैल।

आद्य श्राद्ध क अतिरिक्त अपन वार्षिक श्राद्धौ क हेतु पाँच वर्षी धरि किछु टाका खर्च क उल्लेख वसीयतनामा मे कैल अछि। तदनुसार काशी मे रानी साहेबा क वार्षिक श्राद्ध सम्पन्न होइछ। प्रचुर अन्न ओ वस्त्र दान क व्यवस्था कुमार साहेब तथा रानी साहेबा क वार्षिक श्राद्धहिं क अवसर पर रहैछ।

गया श्राद्ध क हेतु…१००० टाका लिखि गेल छथि। जे एखन सम्पन्न नहि भेल अछि।

इह कल्पलता समागता
ननु या मानव-पुण्यसम्पदा ।
दुरदृष्ट वशाज्जनस्य सा
सहसा हन्त ?? पुनर्दिवं गता ॥

(८६)

रानी साहेबा क अभाव मे व्याकुल आत्मा कैं सन्तोष प्राप्त्यर्थ आव अपन हृदय मे एही भाव क आधान करै पड़ छ जे, जे स्वर्गीय कल्पलता मानव जाति क जाहि अमित पुण्योदय वश एहि भूलोक पर आइलि छलि, ओकर भोग पूर्ण भै जैवाक अनन्तर ओ ओतैक हेतु विदा भै गेलि, जतै सँ ओ आइलि छलि ।





अस्तं गतस्त्वमसि धर्म ! गता गतिस्ते
भक्तेऽनुरक्त-हृदयो भव दुष्ट ! पाप ! ।
लोकेऽत्र तिष्ठसि निरर्थकमर्थिते ! त्वं
चन्द्रावती गतवती ननु मर्त्यलोकात् ॥

(९०)

सन्तोष क हेतु लोक जे किछु विचारौ किन्तु प्रत्येक व्यथित अन्त-रात्मा क श्वास प्रश्वास अपन अस्फुट शब्दँ कहि रहल अछि जे वृद्ध सनातनधर्म ! आव अहाँ खतम भै रहल छी । भगवति भक्ति-देवि ! अहूँ क आव के गति ! दुष्ट पाप ! आब अहाँ खूब प्रसन्न होउ । याचने ! आव अहाँ व्यर्थ एहि लोक मे किएक वैसलि छी ? रानी चन्द्रावती तँ एहि लोक सँ विदा भै गेलीहि ।

विषय-विरतिं पूर्णामाप्ताऽभजच्छिवरूपतां
नृपति-रमणी देवी चन्द्रावती शुभवल्लरी।
कथमथ नचेच्छोकान्मूर्च्छां गतामपि मातरं
शरणरहितांश्चान्यान् वन्धून्विहाय हठाद्गता ॥

(६१)

ई निश्चित मानै पड़त जे ओ शुभ क लता स्वरूपा रानी चन्द्रावती पूर्ण विषय-वैराग्य प्राप्त कैए कँ एहि लोक सँ गेलीहि। नहि तँ अपन वियोग जन्य शोक सँ मूर्छा पौनिहारि जननी तथा अन्य निराश्रय अपन बन्धु बान्धव, एवं क्रन्दन व्याकुल-भृत्य कँ छोड़ि कोना जाए पबितथि ?

टिप्पणी—रानी साहेबा क पूजनीया माँता क नाम "लुटनि छल। ई हो रानी साहेबा क विरह सँ व्याकुल-हृदया भै कोना दिन विता सकितथि ? विगत···सन्···१३४५ साल मे ईहो एहि संसार सँ सम्बन्ध तोड़ि विदा भै गेलीहि। हिनको श्राद्ध क हेतु रानी साहेबा···५००० टाका लिखि गेलि छलीहि जाहि सँ कोइलखहिं मे यशस्कर रूपेँ हिनक श्राद्ध सम्पादित भेल। हिनक किछु टका जमा छल, जाहि सँ हिनक सारा पर मन्दिर शिव-लिङ्ग क स्थापनार्थ बनाओल गेल। एहि सभ कार्य्य क सुचारु सम्पादन हिनक सहोदर भाए श्रीघनश्याम सुन्दर झा कैल। जनिक उल्लेख आनो ठाम भेल अछि।

इतो गतवतीमपि-त्रिनयनाऽभिरामाऽऽननां
सतीकुल-शिरोमणिं सततमर्थये सादरम् ।
ततोप्यमितवैभवाऽसि ननु देवि दीनानिमान्
दयापरविलोकनैः सपदि रक्ष शोकाऽऽकुलान् ॥

(६२)

यद्यपि रानी साहेबा एहि लोक सँ सम्बन्ध विच्छेद कै चलि गेलीहि तथापि हमरा लोकनि हुनका ओतै ई सतत सादर प्रार्थना करवैन्हि जे देवि ! जे किछु होअओ, किन्तु अहाँ घाटा मे नहि तरकि अहिं मे छी । कारण पहिने अहाँ क मुख मण्डल दुइए आँखि रखैत छल, और आब ओ तीनि आँखि सँ सुशोभित भै गेल अछि । पहिने भूमण्डला क किछु भाग पर अहाँ क आधिपत्य छल और आब त्रिलोक क अधीश्वरी हैबाक कारणे अमित-वैभवा भै गेलि छी अतएव शोकाऽऽकुल अपन आश्रित जन-समुदाय पर कृपा कटाक्ष क निःक्षेप करी । ओकरा विसरी नहि ।

लेखक परिचयः

माता भगवती यस्य पिता च बबुनन्दनः
चन्द्रशेखर शर्मा तु यस्याऽऽसीत्प्रथमो गुरुः ॥

(६३)

द्वितीयस्तर्कवागीशस्सम्राट्सम्मानभाजनम् ।
फणिभूषण-शर्मोद्यद्यशष्कुमुद-बान्धवः ॥

(६४)

स्फुरन्महामहोपाध्या योपाधिश्शिवतां गतः ।
वामाचरण शर्म्माऽऽसीत्तृतीयश्शास्त्र-वारिधिः ॥

(६५)

- तेनाऽऽनन्देन मन्देन द्वीपेषु-गजभूमिते ।
शाके व्यवर्णि चरितं चन्द्रावत्यास्समुज्वलम् ॥

(९६)

अनेन वर्णनेनाऽस्तु प्रीता सा भवभामिनी ।
यत्र लीना समभवद्राज्ञी कल्पलतोपमा ॥

(९७)

शाके १८५७ में ई रानी चन्द्रावती देवी क संक्षिप्त जीवन वृत्त लिखल गेल अछि । एकर लेखक छथि सिंहवाड़ ग्रामवासी पण्डित श्री आनन्द झा न्यायाचार्य्य । जनिक माता श्री भगवती देवी छथि एवं पिता गायत्रीजप-निरत लब्ध-काशीमुक्ति बबुनन्दन झा छलाह, गायत्री-गुरु तथा प्रथम विद्यागुरु काशीमुक्त पं० चन्द्रशेखर झा जी छलाह । एवं द्वितीय विद्या-गुरु महापहोपाध्याय श्रीमान् फणिभूषण तर्कवागीश महोदय छथि, जे वर्तमान काल में कलकत्ता युनिभर सीटी (विश्वविद्यालय) क प्रधान दार्शनिक प्रोफ़ेसर पद पर आसीन छथि एवं अन्तिम विद्या-गुरु प्राप्त—शिवसायुज्य महामहोपाध्याय विश्व विश्रुत वामाचरण भटार्य्य महोदय छलाह । जे काशी गभर्नमेन्ट संस्कृत कौलेज क प्रधान अध्यापक छलाह ।

उक्त मन्द लेखक क ओहि ईश्वर परब्रह्म आदि शब्दैं कहलि गेनिहारि आद्या शक्ति क ओतै प्रार्थना यैह अछि जे एहि वर्णन सँ ओ प्रसन्ना होथु । जनिका मे रानी चन्द्रावती अपना कैं लीन कैल ।

यत्कीर्त्तिर्वरटा सुधासमुदय–ग्रासाऽभिलाषावशा
द्रुत्वा व्योमतलं मृगाङ्कचषकात्पीत्वाऽमृतंस्वेच्छया ।
तृप्ता क्रोड़नदत्त–चञ्चुभिरथप्रक्षिप्य तद्विन्दुभि
र्मन्ये तारकितं नभस्समकरोन्निश्शेषदिग्गामिनी ॥

(६८)

जाहि रानी साहेबा क कीर्त्ति रूपिणी हंसी अमृत–मुदाय क पान क इच्छा सँ आकाश तक पहुचलि । और चन्द्रमा स्वरूप चानी क पान-पात्र सँ इच्छानुसार खूब अमृत पीउलक । अनन्तर पक्षीक स्वभावानुरूप अपन लोल सँ आकाश वीच जे अमृत-विन्दु छिटलक सैह जेना तारा समुदाय रूप में भासित भै रहल हो ।

टिप्पणी–एहिठाम तीनि पद्यै रानी चन्द्रावतीक कीर्त्तिक वर्णन कैल गेल अछि । तीनू में विभिन्न प्रकारै तारा सृष्टि क कल्पना कैल गेल अछि ।

पक्षी क ई स्वभाव प्रायः प्रथिते अछि जे पानि पीवाक अनन्तर चोंच सँ एहमर ओहमर जल फेकि खेलाइछ ।



यद्वा यत्कीर्त्तिहंसीस्वसहचरदिनाऽधीशतुल्यप्रताप-
प्राप्तात्यन्ताङ्गतापा गगनसुरनदीवारिपूरे निमग्ना
नष्टे तापे प्रसन्ना तुहिनमय-वनादुत्थिता तीरदेशे
पक्षव्याधूननोत्थैरकृतजलकणैस्तारकापुञ्जसृष्टिम्॥

(६६)

अथवा जनिक कीर्त्ति हंसी अपना सङ्ग चलनिहार सूर्य्य क समान जनिक प्रताप सँ अत्यन्त गरमी पावि आकाश गङ्गा में जाय डुबकी लगाओल। गरमी शान्त भेला उत्तर तीर देश में आवि पक्षी क स्वभावानुरूप अपन पाँखि फड़ फड़ौलक। ओहिसँ जे स्वच्छ आकाश बीच जलबिन्दु समुदाय खसल वैह जेना तारा समुदाय क रूपैं देखल जाइत हो।

टिप्पणी—पक्षीक ई स्वभाव सर्वजन-प्रसिद्ध अछि जे ओ स्नानो पाँखि फड़फड़वैते करैछ।

यत्कीर्त्तिलक्ष्मीकरपल्लवस्खल-
द्विलोलदीप्तिर्नवमालिकाऽऽलिः।
कपालिमौलिप्रपतज्जलाऽमल-
प्रभं सभं विष्णुपदं करोति॥

(१००)

किंवा जाहि रानी चन्द्रावती क कीर्त्ति रूपिणी लक्ष्मी क हाथ सँ खसनिहार चञ्चल दीप्ति नेवारि फूल क समुदाय, महादेव क माथ पर खसनिहार गङ्गा जल सँ धोएल हैबाक कारणेँ अमलप्रभ विष्णु पद कैँ ताराहार सँ जेना विभूषित कैने हो।

टिप्पणी—अभिप्राय ई अछि जे रानी साहेबा क सर्वत्र गामिनी कीर्त्तिरूपा लक्ष्मी मानू आकाश मार्गें विचरण कै रहलि छलीहि। पतिपरायणा भगवती लक्ष्मी कैँ सन्ध्या समय प्राप्त हैबाक कारणेँ



अपन पतिदेव भगवन् विष्णु क चरण कमल में पुष्पाञ्जलि देवाक आवश्यकता भेल। तदनुसार जे ओ भरि आँजुर नेवारि लै विष्णुपद (आकाश) में पुष्पाञ्जलि देल वैह वितत आकाश में जेना तारा बनि गेल हो।

विष्णुपद शब्द आकाश तथा भगवान् विष्णु क पैर दुहु अर्थ क बोधक होइछ। "सभ" केर अर्थ तारा सहित तथा दीप्ति सहित दूनू होइछ "भ" केर तारा अर्थ "नक्षत्र मृक्षंभं तारा तारका प्युडुवाऽस्त्रियाम्" एहि अमर कोषक अनुसार बूझक थीक।



यत्पाणिकल्पतरुसङ्गभयाऽभिभूतो
मन्ये हिमालयनगान्तरितो हि मेरुः ।
रत्नाकरोऽपि निजवीचि करैर्विवृद्धै
र्भीतः प्रदर्शयति शुक्ति कपर्दकादीन् ॥

(१०१)

इति चन्द्रावती चरितं समाप्तम् ।

जाहि रानी साहेबा क कर कल्पवृक्ष सँ कदाचित् भेंटने भैजाए एहि भयेँ जेना सुमेरु हिमालय क उत्तर जाए नुकैल होथि। एवं रत्नाकर समुद्र जेना पहिनहि डेराय अपन तरङ्ग स्वरूप हाथ कैँ पसारि ई देखवैत होथि जे हमरा मे आब केवल कौड़िए सितुआ बँचि रहल अछि रत्न नहि ।

समाप्त

टिप्पणी—रत्नाकर होइतहुँ समुद्र आब ऊपर कँ शंखे सितुआ आदि फेकि जाइत छथि सँ किएक ? बुझि पड़ैछ हिनक कुश तिल सँ डेराए रत्न क अपलाप क हेतु एहि तरह क आचरण सुरूह कैल। जे आब हुनक स्वभाव भै गेल।

सिर्फ टायटिल छपा।

मुद्रक-बाबू मन्नूलाल खत्री, काशी विश्वनाथ प्रेस, काशी।